अरफ़ात किरण

जंग क्यों होती है?

"मौजूदा तर्ज़े ज़िन्दगी में इन्सानियत की बड़ाई मालदारी और माद्दी उरूज है। आज दुनिया में सारा फ़साद इसी तर्ज़े फ़िक्र और इसी मेयारे ज़िन्दगी का है। पिछले दिनों आलमी जंगें माल व दौलत और इज़्ज़त व जाह की हवस का नतीजा थीं जिसमें लाखों जानें चली गयीं और मुल्क के मुल्क तबाह हो गए। बस आज क़ौमों के टकराने वाला जज़्बा यह है कि हमारी तिजोरी भरे और हमारा बोलबाला हो और हमारा सिक्का चले। हमारी क़ौम सरफ़राज़ हो, यह बड़े पैमाने की ख़ुदग़र्ज़ियां सारे फ़ित्ने-फ़साद की जड़ हैं। तहज़ीब या कल्चर या ज़बान का इख़्तिलाफ़ फ़साद का कारण नहीं, बल्कि इस टकराव में नफ़्स की ग़रज़ काम कर रही है, ख़ुदग़र्ज़ियां टकरा रही हैं, ग़रज़ का मज़हब टकरा रहा है।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

March 2022

पर्दा औरत का फ़ितरी हक़

"पर्दा औरत का फ़ितरी हक़ है, औरत घर में हो या बाज़ार में, कालिज में हो या यूनिवर्सिटी में या दफ़्तर या अदालत में हो, वह अपनी फ़ितरत को बदलने से क़ासिर है, वह जहां होगी, उसकी ज़मीर की ख़लिश और फ़ितरत की आवाज़ उसे पर्दा करने पर मजबूर करेगी। वह बेदीन क़ौमें जो औरत की फ़ितरत से अंधी और ख़ालिक़–ए–फ़ितरत के एहकाम से अनजान हैं वह अगर औरत की पर्दादारी से जुर्म का इरतिकाब करें तो जाए ताज्जुब नहीं, मगर एक मुसलमान जिनके सामने ख़ुदा और रसूल के एहकाम और उसके बुज़ुर्गों का शानदार माज़ी मौजूद हो उसको अपनी बहू–बेटियों को पर्दे से बाहर लेकर आना मुर्दा ज़मीरी का क़बीह तरीन मुज़ाहिरा है। औरत की साख़्त पर दाख़्त, उसकी आदात व अतवार और उसकी गुफ़्तार व रफ़्तार पुकार–पुकार कर कह रही है कि वह औरत (मस्तूर) है, उसे सतर (पर्दा) से बाहर लाना उस पर बदतरीन ज़ुल्म है।

सितम ज़रीफ़ी की हद यह है कि वह औरत जो अस्मत व तक़द्दुस का निशान थी और जिसकी इफ़्फ़त व नज़ाहत से चांद शर्माता था, उसे पर्दे से बाहर लाकर उससे नापाक नज़रों की तस्कीन और नजिस दिलों की तफ़रीह का काम लिया गया। नई तहज़ीब में औरत घर की ज़ीनत नहीं बल्कि शमअ–ए–महफ़िल है। उसकी मुहब्बत व ख़ुलूस की हर अदा अपने शौहर और बाल–बच्चों के लिए वक़्फ़ नहीं बल्कि उसकी रानाई व ज़ेबाई वक़्फ़ तमाशा–ए–आलम है। वह तक़द्दुस का निशान नहीं कि उसके एहतिराम में ग़ैर महरम नज़रें फ़ौरन झुक जाएं, बल्कि वह बाज़ारों की रौनक है। आज दो पैसे की चीज़ भी औरत के बग़ैर नहीं बेची जाती, इससे ज़्यादा औरत के मान की हानि और क्या हो सकती है? क्या इस्लाम ने औरत को यही मक़ाम बख़्शा था? क्या नई तहज़ीब ने औरत पर यही एहसान किया? क्या यही औरत की आज़ादी है जिसके लिए गले फाड़–फाड़ कर नारे लगवाए जाते थे? इस्लाम की नज़र में औरत एक ऐसा फूल है जो ग़ैर महरम नज़र की गरम हवा से फ़ौरन मुरझा जाता है, उसे पर्दे से बाहर लाना उसकी फ़ितरत की तौहीन है।

इधर औरतें पर्दे से बाहर आईं, उधर उन्हें ज़िन्दगी की गाड़ी में जोत दिया गया, बिज़नेस करें तो औरतें, वकालत करें तो औरतें, जर्नलिज़्म करें तो औरतें, अदालत की कुर्सी पर बैठें तो औरतें, असेम्बली में जाएं तो औरतें, ग़रज़ कारोबारी ज़िन्दगी का वह कौन सा बोझ था जो मज़लूम औरत के नाज़ुक कंधे पर नहीं डाल दिया गया, सवाल यह है कि जब यह तमाम फ़र्ज़ औरत के ज़िम्मे आए तो मर्द किस मर्ज़ की दवा हैं? इस्लाम ने नान–नफ़्क़े की तमाम ज़िम्मेदारी मर्द पर डाली थ, लेकिन बुज़दिल मग़्रिब ने मर्दों के साथ–साथ चलने का झांसा देकर यह सारा बोझ उठाकर औरत के सर पर रख दिया।"

मुहद्दिस-अल-अस्र हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद यूसुफ़ बिन्नौरी (रह०)

(बसाएर व अब्र: २३३)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:३ मार्च २०२२ ई० वर्षः१४

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी

महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इन्सानी लालच का अंजाम

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमायाः

"अगर आदमी के पास सोने की दो वादियां हों, तो उसे एक तीसरी वादी की ख़्वाहिश होगी, वाक़्या यह है कि उसका पेट किसी चीज़ से नहीं भरेगा, सिवाए मिट्टी के"

सुनन तिरमिज़ीः 2337

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 15रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू0

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

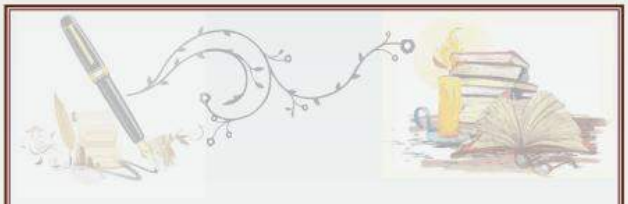

ज़ाहिद ने मेरा हासिल-ए-ईमां ...

जनाब असग़र गोंडवी (रह०)

मस्ती में फ़रोग़-ए-रुख़ जानां नहीं देखा
सुनते हैं बहार आयी गुलिस्तां नहीं देखा

ज़ाहिद ने मेरा हासिल-ए-ईमां नहीं देखा
रुख़ पर तेरी जुल्फ़ों को परेशां नहीं देखा

आए थे सभी तरह के जलवे मेरे आगे
मैंने मगर ऐ दीदा-ए-हैरां नहीं देखा

हर हाल में बस पेशे नज़र है वही सूरत
मैंने कभी रुए शब-ए-हिज्रां नहीं देखा

कुछ दावा-ए-तमकीं में है माज़ूर भी ज़ाहिद
मस्ती में तुझे चाक गिरेबां नहीं देखा

रुदादे चमन सुनता हूं इस तरह क़फ़स में
जैसे कभी आंखों से गुलिस्ता नहीं देखा

मुझ ख़स्ता व महजूर की आंखें हैं तरसती
कब से तुझे ऐ सरो ख़रामा नहीं देखा

क्या-क्या हुआ हंगाम जुनूं यह नहीं मालूम
कुछ होश आया जो गिरेबां नहीं देखा

शाइस्ता सोहबत कोई उनमें नहीं असग़र
काफ़िर नहीं देखे कि मुसलमां नहीं देखा

इस अंक में:

मौजूदा हालात और कुछ गुज़ारिशें.....3

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मानवता का निर्माण.....4

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी

मुसीबतें क्यों आती हैं?.....6

हज़रत मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी

सच्चाई क्या है?.....8

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सदक़ा-ए-फ़ित्र के चन्द मसाएल.....10

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

पूंजीवाद (Capitalism).....13

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

मौलाना अली मियाँ का इश्तिग़ाल-ए-हदीस.....15

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

रूस-यूक्रेन युद्ध : दृश्य-परिदृश्य.....18

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मौजूदा हालात और कुछ गुज़ारिशें

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नद्दवी

हुकूमतें आती हैं और जाती हैं, कभी किसी को ज़्यादा वक़्त मिलता है और कभी किसी को कम, यह वह ज़ाहिरी कामयाबी है जिसके भविष्य की कोई ज़मानत नहीं। खुद हिन्दुस्तान में इन्दिरा गांधी के ज़माने में एक दौर ऐसा गुज़रा है कि नहीं लगता था कि इस सत्ता को भी जल्द ऐसा ज़वाल आने वाला है। हर उरूज का ज़वाल है, उसकी मुद्दत की पेशीनगोई अगर की जा सकती है तो अन्दर की उस ठोस मेहनत से की जा सकती है जो क़ौमें या जमाअतें करती हैं, मुस्तक़बिल उस ज़मीनी या ठोस मेहनत को होता है जो लगातार की जाए। जिसमें कुछ अर्से के लिए ज़ाहिरी कामयाबियों से नज़र बचाते हुए वह बुनियादी काम किये जाएं जो क़ौमों की कामयाबियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कुंजी की हैसियत रखते हों, वरना इलेक्शन की मेहनत हो सकता है कुछ सीटें किसी की बढ़ा दे या घटा दे लेकिन यह मसले का हल नहीं।

मौजूदा हालात में ख़ास तौर पर मुसलमानों पर बड़ी ज़िम्मेदारी आ जाती है। उसके पास जो समाजी व अख़लाक़ी निज़ाम–ए–ज़िन्दगी है, उससे दुनिया की क़ौमें ख़ाली हैं, लेकिन अफ़सोस कि उनके अन्दर इस निज़ाम को पेश करने और दुनिया को नया रुख़ देने का वह शौक़ और सलाहियत कम होती जा रही है जो कभी मुसलमानों की ख़ासियत थी।

आज सबसे बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि हम मुसलमान अपना जाएज़ा लेकर नया सफ़र शुरू करें, सफ़र में रुकावटें और परेशानियां आ सकती हैं, लेकिन मंज़िल जिसके सामने हो वह कभी हिम्मत नहीं हारता, वह हमेशा नए–नए रास्ते तलाश करता है और मंज़िल को पाने के लिए कोशिश करता रहता है, मायूसी का इस्लाम से कोई लेना–देना नहीं, मुसलमानों का कभी यह तरीक़ा नहीं रहा, इसलिए मायूसी के लफ़्ज़ को ग़लत शब्द की तरह मिटा देना चाहिए।

सबसे पहले हमें अपनी ईमानी सतह को बुलन्द करने की ज़रूरत है, अल्लाह पर यक़ीन और उसके फ़ैसलों पर राज़ी रहना, जो होता है वह हक़ीक़त में अल्लाह का फ़ैसला है, कोई ताक़त व पावर में आता है तो अल्लाह के हुक्म से आता है, उसकी मस्लहतें भी वह हकीम व ख़बीर ख़ूब जानता है और यक़ीनन हमारी बुराइयों व गुनाहों का भी नतीजा भी हमें भुगतना पड़ता है, हम अपने ईमान को मज़बूत करें, ईमान की मांग को बुलन्द करें और इस्लाम के मुकम्मल निज़ामे हयात को अपनी ज़िन्दगी के लिए नमूना बनाएं।

दूसरे हमें तालीम (शिक्षा) के मैदान में आना होगा और इसका निज़ाम अपने हाथों में लेना होगा। ज़िन्दगी की ज़रूरतों को समझकर जिन्दगी के हर हिस्से के लिए अपने आप को तैयार करना होगा और इल्म को अख़्लाक़ से जोड़कर इन्सानियत के लिए एक नया रास्ता बनाना होगा जिसकी सारी दुनिया को ज़रूरत है। इसके लिए जगह–जगह इस्लामिक स्कूल्ज़ और कालेजेज़ बनाने पड़ेंगे, जहां हमारी पिन्चानवे फ़ीसद आबादी तालीम हासिल करती है। अगर इन इदारों के लिए हमने फ़िक्र न की तो यह नई नस्ल हमारे हाथों से निकल जाएगी, आगे की तालीम के लिए बड़े पेमाने पर कोचिंग सेन्टर्स की भी ज़रूरत है, जहां हमारी नई नस्ल सही इस्लामी फ़िक्र के साथ अमल के मैदान में आ सके।

तीसरी बात यह है कि हमें मुहल्ला–मुहल्ला एक–एक मस्जिद को मरकज़ बनाकर अपना इज्तिमाई निज़ाम भी क़ायम करने की ज़रूरत है। उस मस्जिद से मुताल्लिक़ कोई घर ऐसा न बचे जिसकी हमें फ़िक्र न हो, हर–हर घर का एक–एक बच्चा और बच्ची ज़रूरी दीनी तालीम हासिल करे, जिससे उसका ईमान महफ़ूज़ रह सके, इसक अलावा एक–एक घर की बुनियादी परेशानियों का हमें इल्म हो और उनको दूर करने का भी निज़ाम बनाया जाए, ग़रीबों के रोज़गार की भी फ़िक्र की जाए और इसके लिए भी तदबीरें अख़्तियार की जाएं, साहिबे फ़िक्र और साहिबे सरवत तबक़ा उसको दीनी मिज़ाज के साथ अपना मैदाने अमल बनाएं और उसके लिए ज़रूरी वसाएल अख़्तियार करे।

चौथी बात यह कि हम अपने अख़लाक़ व इन्सानियत के साथ दुनिया के सामने आएं और उन ग़लतफ़हमियों को अपने तर्ज़े अमल से दूर करें जो इस वक़्त बिरादराने वतन में पैदा की जा रही हैं। हम मुकम्मल इस्लाम को अपनी ज़िन्दगी में दाख़िल करें और अपने अख़लाक़ से दिल जीतने की कोशिश करें, तो यक़ीनन यह काम आसान हो जाएगा और इसके साथ वह पयामे इन्सानियत का लिट्रेचर भी आम करने की कोशिश की जाए, जिससे ज़हनसाज़ी होती है, मुलाक़ातें भी करें, कार्नर मीटिंगे और डायलाग भी इस सिलसिले में मुफ़ीद हैं।

मदरसों को मज़बूत करना हमारी बुनियादी ज़िम्मेदारी है कि यही दीन के क़िले हैं। यहीं से हमको अपने कामों के लिए ताक़त व तदबीर मुहैया होगी। यह कुछ ज़रूरी और ठोस काम हैं, जो इंशाअल्लाह हमारे कामयाब मुस्तक़बिल की ज़मानत हैं। ज़रूरत इस बात की है कि हम पूरी ताक़त और तदबीर के साथ इन कामों में लग जाएं, अल्लाह की मदद शामिले हाल होगी और इंशाअल्लाह कल हालात कुछ और होंगे।

मानवता का निर्माण

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

ईसार के दो वाक़ये: आप मेरे इन लफ़्ज़ों पर ताज्जुब न करें, यह सब तारीख़ के वाक़यात हैं, हमारी आपकी इसी दुनिया में ऐसा हो चुका है, तारीख़ में ऐसे वाक़यात गुज़रे हैं जो इन फ़र्ज़ी क़िस्सों और अफ़सानों से कहीं ज़्यादा हैरतअंगेज़ और ताज्जुबखेज़ हैं, जो आज फिल्मों में और स्क्रीन पर दिखलाए जाते हैं।

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की दुनिया में आमद के कुछ अर्से बाद का क़िस्सा है कि एक मुसलमान अपने एक ज़ख़्मी भाई की तलाश में पानी लेकर निकले कि शायद पानी की ज़रूरत हो तो मैं उनकी ख़िदमत करूं, ज़ख़्मियों में उनको अपने भाई नज़र आ गए, जो ज़ख़्मों से निढ़ाल और प्यास से बेक़रार थे, उन्होंने प्याला भरकर पेश किया तो ज़ख़्मी भाई ने एक दूसरे ज़ख़्मी की तरफ़ इशारा किया कि पहले इनको पिलाओ, अगर वाक़्या यहीं ख़त्म हो जाता तब भी इन्सानियत की बलन्दी के लिए काफ़ी था, और तारीख़ का एक यादगार वाक़्या होता, लेकिन वाक़्या यहीं ख़त्म नहीं होता, जब इस ज़ख़्मी के सामने प्याला पेश किया गया तो उसने तीसरे जख़्मी की तरफ़ इशारा किया, इस तरह हर जख़्मी अपने पास वाले जख़्मी की तरफ़ इशारा करता रहा, यहां तक कि प्याला चक्कर काटकर पहले ज़ख़्मी की तरफ़ पहुंचा तो वह दम तोड़ चुका था, दूसरे के पास पहुंचा तो वह भी रुख़्सत हो चुका था, इसी तरह एक के बाद यह सब जख़्मी दुनिया से चले गए, लेकिन तारीख़ पर अपना एक नक़्श छोड़ गए। आज जबकि भाई–भाई का पेट काट रहा है और इन्सान दूसरे इन्सान के मुंह से रोटी का टुकड़ा छीन रहा है, यह वाक़्या रोशनी का एक मीनार है।

एक दफ़ा रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के पास कुछ मेहमान आए, आपके यहां कुछ खाने को नहीं था। आपने फ़रमाया कि इनको कौन अपने घर ले जाएगा। एक सहाबी हज़रत अबू तल्हा अंसारी ने अपने को पेश किया और मेहमानों को ले गए, घर मे खाना कम था, घर में मशविरा हुआ कि बच्चों को सुला दिया जाएगा और खाना मेहमानों के सामने रखकर चिराग़ बुझा दिया जाएगा, चुनान्चे ऐसा ही हुआ, मेहमानों ने पेट भरकर खाना खाया और अबूतल्हा भूखे उठ गए। मेहमानों को अंधेरे में पता चलने नहीं पाया कि उनका मेज़बान खाने में शरीक नहीं है और वह खाली हाथ मुंह तक ले जा रहे थे।

इन्सानियत का पेड़ अन्दर से हरा–भरा होगा: बस पैग़म्बर इन्सान के अन्दर तब्दीली पैदा करते हैं, वह निज़ाम बदलने की इतनी कोशिश नहीं करते हैं जितना मिज़ाज बदलने की कोशिश करते हैं। निज़ाम हमेशा मिज़ाज का ताबेअ रहा है। अगर दिल नहीं बदलता, मिज़ाज़ नहीं बदलता तो कुछ नहीं बदलता। लोग कहते हैं कि दुनिया ख़राब है, ज़माना ख़राब है, मैं कहता हूं कि यह कुछ नहीं बल्कि इन्सान ख़राब है, क्या ज़मीन की हालत में फ़र्क़ पड़ गया, क्या हवा का असर बदल गया, क्या सूरज ने गर्मी और रोशनी देनी छोड़ दी, क्या आसमान की हालत तब्दील हो गयी, किसकी फ़ितरत में फ़र्क़ पड़ा। ज़मीन उसी तरह सोना उगल रही है। उसके सीने से उसी तरह अनाज का ज़ख़ीरा उबल रहा है, फलो के ढ़ेर निकल रहे हैं लेकिन तक़सीम करने वाले पापी हो गए हैं। यह ज़ालिम जब अपनी ज़रूरियात की फ़ेहरिस्त बनाते हैं तो अख़बरात के सफ़हात उसके लिए तंग और दफ़तर के दफ़तरान के लिए कम और जब दूसरों की ज़रूरतों पर सोचते हैं तो सारा इल्मे माशियात की क़ाबिलियत का कमाल उसके मुख़्तसर करने में सर्फ़ कर देते हैं, जब तक यह रुझान नहीं बदलता, इन्सानियत कराहती रहेगी, पैग़म्बर दिलों में इन्जेक्शन लगाते हैं, लोग बाहर की टीप–टाप करते हैं और उस पर सारा ज़ोर सर्फ़ करते हैं। पैग़म्बर अन्दर के घुन की फ़िक्र करते हैं। आज सारी दुनिया में यही हो रहा है कि इन्सानियत का दरख़्त अन्दर से सूखता चला जा रहा है। कीड़ा उसके गूदे को खाए चला जा रहा है लेकिन ज़माने के बुक़राद ऊपर से पानी छिड़कवा रहे हैं। पेड़ के अन्दर हरियाली और उसकी बढ़ोत्तरी की जो ताक़त

थी वह ख़त्म हो चली है, लेकिन पत्तियों को हरा–भरा करने को हवाएं पहुंचायी जा रही हैं, पानी छिड़का जा रहा है कि सूखे पत्ते हरे हों। पैग़म्बरों ने इन्सान को इन्सान बनाने की कोशिश की। उन्होंने उसे ईमानी इन्जेक्शन दिया और कहा कि ऐ भूले हुए इन्सान, अपने पैदा करने वाले को पहचान और सोते जागते, चलते–फिरते उसे निगरां मान, न उसे ऊंघ का ग़ल्बा होता है, न उसे नींद आती है।

मानवता का निर्माणः बस जब तक इन्सान के दिल व जिगर में मुहब्बत की लहरे न उबाल मारें, जब तक दिल के अन्दर कुर्बानी का ज़ज्बा न हो मानवता का सुधार असंभव है। बस वे ऐसा मानवीय प्रशिक्षण करते हैं कि उसमें भाई के लिए त्याग करने व दुख सहने की भावना पैदा होती है। वे केवल क़ानून से दुनिया का इलाज नहीं करते बल्कि वे मनुष्य के अन्दर सच्ची मानवता, मानवता का गुण पैदा करते हैं। वे ऐसी क़ौम पैदा करते हैं मानवता का सही प्रदर्शन करके यह साबित कर देती है कि हम पेट व सर के गुलाम नहीं हैं। वह ज़बाने हाल से ऐलान करती है कि वह पेट की पूजा करनेवी, शौक पूरा करने वाली, दौलत की पुजारी, बादशाह परस्त या परिवारवादी नहीं। जब तक ऐसी क़ौम सामने नहीं आती, मानवता का सुधार नहीं हो सकता है।

अगर किसी देश में ऐसी क़ौम पैदा होती है कि सबको फ़ायदा पहुंचाए और ख़ुद को भूल जाए तो वह इन्सानियत को सुधार सकती है। इतिहास गवाह है कि बड़े–बड़े इन्सानियत के शुभचिन्तक गुज़रे हैं, लेकिन किसी न किसी स्टेज पर आप यह पांएगे कि उन्होंने आख़िरकार अपना इन्तिज़ाम कर लिया। ऐसे बेशुमार क़ौम के सेवक गुज़रे हैं, जिन्होंने क़ौम सुधार का काम बड़ी मुश्किलों में शुरू किया, जेलें काटीं, लेकिन आख़िरकार जेल से निकलकर हुकूमत की कुर्सियों पर जा बैठे, उनका यह हक़ था, उन्हें मुबारक हो।

पैग़म्बरों (संदेष्टा) की ज़िन्दगीः लेकिन अल्लाह के पैग़म्बर दुनिया से बेदाग़ चले गए। उन्होंने दुनिया के आराम की ख़ातिर अपना सुख त्याग दिया। उन्होंने सौ प्रतिशत दूसरों के फ़ायदे के लिए तकलीफ़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारी, और एक प्रतिशत भी अपना फ़ायदा नहीं उठाया। वह और उनके सहाबी और साथी जहां से गुज़रे दुनिया को निहाल कर दिया। दुनिया आज तक उनके लगाए हुए बाग़ का फल खा रही है, जिसे उन्होंने अपने ख़ून से सींचा था। जो दूसरों के घर में रोशनी कर गए, लेकिन उनके घर में दुनिया से जाते वक़्त अंधेरा था। रसूलुल्लाह ((स0अ0व0)) की दी की हुई रोशनी झोपड़ियों और शाही महलों में एक समान जगमगाई, लेकिन जाते हुए उनके घर के चिराग़ मांगे हुए तेल से जल रहे थे। हालांकि मदीना के सैंकड़ों घरों में उन्हीं का जलाया हुआ चिराग़ जल रहा था था। रसूलुल्लाह ((स0अ0व0)) कहते थेः "हम पैग़म्बरों का कोई वारिस नहीं होता, हम जो कुछ छोड़ें वह सब ग़रीबों का हक़ है।" इससे बढ़कर आपका कहना था कि जो कोई मर गया और वह कुछ तरका (विरासत का माल) छोड़कर गया, वह उसके वारिस को मुबारक हो, हम उससे एक पैसा नहीं लेंगे। लेकिन अगर कोई क़र्ज़ छोड़कर गया है तो वह मेरे ज़िम्मे है, उसे मैं अदा करूंगा। क्या दुनिया में किसी बादशाह या नेता ने यह नमूना छोड़ा है? आपकी ज़िन्दगी इन्सानियत का श्रेष्ठ उदाहरण है। आप दुनिया के सामने ऐसा नमूना पेश कर गए जिसमें सिवाए त्याग व प्रेम और दूसरों के ग़म में घुलने के कहीं अपना रत्ती बराबर फ़ायदा नज़र नहीं आता। आप अरब के एकमात्र बादशाह थे। दिलों पर उनकी बादशाही थी लेकिन दुनिया से दामन बचाए हुए बेमन्नत चले गए। आप ही नहीं बल्कि जो जितना आप से क़रीब था, उतना ही वह ख़तरे से क़रीब और फ़ाएदे से दूर था। आपने अपनी घरवालियों से खुलकर कह दिया कि अगर दुनिया की बहार–ऐश चाहती हो तो हम तुमको कुछ दे दिला कर अच्छी तरह से तुम्हारे घरों को रुख़्सत कर देंगे। तुम वहां वापस जाओ और राहत व आराम की ज़िन्दगी गुज़ारो और हमसे संबंध समाप्त कर लो। हमारे साथ रहना है तो दर्द, दुख, तंगी व बर्दाश्त इत्यादि करना है। यही इस घर का तोहफ़ा है और इसी पर अल्लाह के यहां ईनाम मिलेगा।

दोस्तो! हम चाहते हैं कि फिर यही ज़िन्दगी आम हो। इन्सानियत की निस्वार्थ भाव से सेवा हो और बेग़रज़ मुहब्बत का रिवाज हो। फिर दूसरों के फ़ायदे के लिए अपने नुक़सान को तरजीह दी जाए। फिर ऐसी क़ौम पैदा हो जो ख़तरे के मौक़े पर आगे–आगे और फ़ायदे के मौक़े पर दूर–दूर नज़र आए। ..... (शेष पेज 13 पर)

मुसीबतें क्यों आती हैं?

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (रह0)

अल्लाह तआला ने इन्सानों को आख़िरत की ज़िन्दगी संवारने के लिए बार–बार होशियार किया और जब भी इन्सान सीधे रास्ते से बहका या अपने मक़सद को भूल गया और नज़रंदाज़ कर बैठा जो उसकी तख़्लीक़ का बुनियादी मक़सद था तो अल्लाह ने नबियों को भेजा, क़ौमों के अन्दर जब बुराइयां और गुमराहियां फैल जाती हैं और अल्लाह तआला को नाराज़ करने वाली बातें हद से ज़्यादा बढ़ जाती हैं और उस वक़्त उनकी गुस्ताख़ियों और बदतमीज़ियों को देखकर महसूस होता है कि अब वह वाक़ई क़ाबिले अज़ाब हैं और इसी दुनिया में उनकी पिटाई की ज़रूरत है, तो ऐसी सूरतेहाल में अल्लाह तआला नबी को भेजता है, ताकि हुज्जत तमाम हो जाए और किसी को यह कहने का जवाज़ न रहे कि हमें पहले से आगाह नहीं किया गया था और न ही हमें सीधे रास्ते की रहनुमाई की थी।

अल्लाह तआला के इल्म में पहले से यह बात जो लोग मानने वाले नहीं हैं, वह बेसते नबी की हुज्जत तमाम होने के बाद भी नहीं मानेंगे, लिहाज़ा उनको सज़ा का मुस्तहिक़ फिर भी क़रार पाना है, लेकिन अल्लाह तआला का हर काम ज़ाहिरी निज़ाम के साथ करता है, इसीलिए उसने नबियों को भेजा और उन्होंने क़ौम की इस्लाह में अपनी पूरी उम्र गुज़ार दी। फिर जब यह बात साबित हो गई कि यह लोग बाज़ नहीं आएंगे तो उसके बाद एक आम शख़्स भी यह कह सकता है कि बिलाशुब्हा ऐसे लोग अज़ाब ही के क़ाबिल हैं, चुनान्चे उसके बाद ही अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होता है।

अल्लाह तआला ने बेसते नबवी के साथ यह ख़ासियत रखी है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की क़ौम पर इज्तिमाई अज़ाब नहीं आएगा, लेकिन रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के मुख़ातिबीन को भी कुरआन मजीद में जगह–जगह मुतनब्बेह किया गया है और पिछली क़ौमों से दर्से इबरत लेने की बात कही गयी और बताया गया कि साबिक़ा क़ौमों पर अज़ाब आ चुका है इसलिए कि क़ौम के हालात ख़राब होते हैं तो उस पर अल्लाह का अज़ाब आता है लिहाज़ा अगर तुमने हमारी और हमारे नबी की बात नहीं मानी तो तुम पर भी यह अज़ाब नाज़िल हो सकता है। लेकिन यह बात अल्लाह तबारक व तआला के इल्म में थी कि यह लोग आख़िर में इस्लाम कुबूल कर लेंगे और उस हद तक नहीं जाएंगे जिस हद तक पिछली क़ौमें चली गयीं थीं जिन्होंने मोजज़ात का मज़ाक़ उड़ाया था, जैसे क़ौमे समूद जिसने न कि नाक़ह को ज़िहब कर दिया या फिर दूसरी वह क़ौमें जिन्होंने हर मोजज़े का इनकार किया और हठधर्मी अख़्तियार की, जब इन्होंने नबियों को इतना तंग कर दिया कि इनको बख़्शने का कोई मौक़ा नहीं रह गया तब अल्लाह तबारक व तआला ने इनके ऊपर अज़ाब भेजा।

अल्लाह तआला का तरीक़ा यह है कि वह यकबारगी कोई बड़ा अज़ाब नहीं भेजता बल्कि पहले छोटे–छोटे अज़ाब देता है, जिसकी ग़रज़ यह होती है कि बन्दे मुतनब्बेह और होशियार हो जाएं। छोटे अज़ाब का मक़सद यह बताना होता है कि अगर तुमने अपनी इस्लाह नहीं की तो किसी बड़े अज़ाब में मुब्तिला हो सकते हो। इसीलिए हम पहले ही तुमको मुतवज्जे कर रहे हैं। और यह भी अल्लाह का अपने बन्दों पर रहम व करम है कि वह बन्दों को मुतवज्जेह कर देता है। जैसे कोई बड़ा शख़्स बच्चे की ग़लती पर उसको तमाचा मार देता है ताकि वह आइन्दा ग़लती न करे और इसकी कोई बुरी आदत न पड़ जाए। ठीक उसी तरह अल्लाह तबारक व तआला बन्दों को तकलीफ़ में मुब्तिला करता है और उसका मंशा यह होता है कि यह बन्दा अच्छा है तो उसका अंजाम भी अच्छा होना चाहिए। यही वजह है कि इसको तकलीफ़ो में डालता है ताकि वह मुतनब्बेह हो जाए और अपनी ज़िन्दगी की इस्लाह कर ले।

कई बार अल्लाह तआला छोटी–छोटी मुसीबतें और तकलीफ़ें इसलिए देता है ताकि एक अच्छे बन्दे को ग़ैर मामूली अर्ज हासिल हो सके और वह आख़िरत में उनके बदले बड़ा फ़ायदा उठाए। उस वक़्त आदमी यह तमन्ना करेगा कि ऐ काश दुनिया में हमको और ज़्यादा तकलीफ़ें मिली होतीं तो हमको यहां मजीद बेहतर अज्र

हासिल होता। यही वजह है कि जब बुज़ुर्गाने दीन तकलीफ़ों में मुब्तिला होते हैं तो अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और उसको सज़ा नहीं समझते बल्कि यह तसव्वुर करते हैं कि अल्लाह तआला को उनकी कोई ऐसी बात पसंद आ गयी है जिसके नतीजे में वह आख़िरत की ज़िन्दगी के अन्दर उनके दरजात बढ़ाना चाहता है ताकि वहां का ज़ख़ीरा बढ़ जाए और वह ख़ूब फ़ायदा उठाएं ताहम इससे भी इनकार नहीं कि जब तकलीफ़ हो तो आदमी को डरना चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं कि यह तकलीफ़ एक सज़ा और तम्बिया के बतौर हो इसीलिए आदमी को सोचना चाहिए कि कहीं हमसे कोई ग़लती तो सरज़द नहीं हुई है। इस तसव्वुर में बाज़ लोग तो इतने ज़्यादा हस्सास होते हैं कि वह अपनी हर तकलीफ़ से मुताल्लिक़ यही सोचते हैं कि वह उनके किसी गुनाह की सज़ा है। फिर जब वह अपनी ग़लती तलाश करते हैं तो उनको समझ में भी आ जाता है कि यह सज़ा हमारे फ़लां गुनाह की हो सकती है। और फिर वह फ़ौरन नदामत के साथ तौबा कर लेते हैं। अजगर्ज़ आदमी को अल्लाह से डरते रहना चाहिए, पता नहीं अल्लाह को कौन सी चीज़ नापसंद हो जाए और हम उसकी सज़ा के मुस्तहिक़ क़रार पाएं।

कई बार अल्लाह तआला का अज़ाब किसी ऐसी बात पर नाज़िल हो जाता है जो बज़ाहिर मामूली लगती है लेकिन वह अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ बात होती है। तो ऐसी बात पर अल्लाह का अज़ाब फ़ौरन नाज़िल हो जाता है और आदमी की सज़ा हो जाती है। जैसा कि सूरह कहफ़ में मौजूद दो बाग़ वालों के क़िस्से से पता चलता है कि जिसमें एक शख़्स को एक नामुनासिब जुमला बोलने की वजह से बड़ी सज़ा से दो–चार होना पड़ा और आन की आन में उसके सब बाग़ात ख़त्म कर दिये गए। इससे साबित होता है कि अगर आदमी अल्लाह के मामले में बेएहतियाती करेगा या कोई नामुनासिब रिमार्क करेगा तो उसकी गिरफ़्त फ़ौरन हो जाएगी। लेकिन आम गुनाहों पर फ़ौरन सज़ा नहीं होती बल्कि उनका हिसाब–किताब आख़िरत में होगा। इस दुनिया में आदमी जो भी गुनाह करेगा तो उसकी सज़ा आख़िरत में होगी। फ़ौरी तौर पर बस उसी गुनाह की सज़ा होती है जिससे अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी हो या वह तकब्बुर और बदतमीज़ी वाली बात हो।

इन्सानों के ऊपर जो छोटी–छोटी मुसीबतें आती हैं यह हक़ीक़त में अल्लाह तआला की तरफ़ से मुतवज्जेह करने के लिए ताज़ियाने होते हैं। उल्मा कहते हैं कि जो मुसीबत आती है उसकी तीन शक्लें होती हैं या तो वह तम्बीया होती है या अज़ाब होता है और या फिर वह नेक लोगों के दरजात में इज़ाफ़े का ज़रिया होती है। अल्लाह तआला इन्सानों को बीमारी में इसलिए मुब्तिला करता है ताकि उसका अज्र मिल जाए। हदीस में है कि क़यामत के दिन जब मुसीबतों पर सब्र का अज्र मिलना शुरू होगा तो आदमी यह तमन्ना करेगा कि ऐ काश दुनिया में हमें और ज़्यादा तकलीफ़ हुई होती लेकिन बाज़ मर्तबा तम्बीह के लिए भी इन्सान के ऊपर मुसीबतें आती हैं। अल्लाह तआला याद दिलाता है कि तुम ग़लत कर रहे हो और इस अमल से तुमको बड़ी मुसीबत पेश आ जाएगी यानि हम तुमको उसकी वजह से बड़ी सज़ा देंगे।

फ़िरऔन के ऊपर जो मुसीबतें आयीं वह उसकी तम्बीह की ख़ातिर ही थीं। अल्लाह तआला ने मुख़्तलिफ़ मुसीबतें भेजीं, कभी मेढक बढ़ गए, वह हर जगह कूदते नज़र आ रहे थे। खाने में घुस जाते और कभी पानी के गिलास में आ जाते, यहां तक कि लोग बिल्कुल आजिज़ आ गए थे। इसी तरह ख़ून बहुत फैल गया था और खटमल बहुत बढ़ गए थे। अल्लाह तबारक व तआला ने इरशाद फ़रमाया कि यह सब अज़ाब की शक्लें थीं। अल्लाह तआला ने इस क़ौम को छोटी–छोटी मुसीबतें दी थीं कि होशियार हो जाओ और ईमान ले आओ, मगर फिरऔर यह करता था कि जब बहुत आजिज़ आ जाता था तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दरख़्वास्त करता था कि तुम अगर अपने अल्लाह से कहकर हमारी यह मुसीबत टाल दो तो हम यक़ीनन ईमान ले आएंगे। चुनान्चे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दुआ करते थे और वह मुसीबत टल जाती थी लेकिन फ़िरऔन की अकड़ फिर भी वैसी ही रहती थी। इसीलिए दोबारा मुसीबत आ जाती थी गरज़ कि उसी तरह मुसलसल सात मुसीबतें आयीं लेकिन फिर भी जब वह न समझा तो अज़ाबे इलाही ने आ पकड़ा।

सच्चाई क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ख़तरनाक बातः

बहुत से लोग यह दावा करते हैं कि हमने बेदारी में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की ज़ियारत की है, यह और ज़्यादा ख़तरनाक बात है, ख़्वाब की ज़ियारत अपनी जगह, वह बरहक़ है, जिसने हुज़ूर को देखा उसने हुज़ूर ही को देखा, शैतान आपकी मुबारक सूरत में आ ही नहीं सकता, लेकिन अगर कोई बेदारी में यह दावा करता है कि उसने हुज़ूर को देखा है यह और ज़्यादा ख़तरनाक बात है। इसमें बड़ा धोखा होता है, अव्वल तो बेदारी में जो इस तरह के वाक़्यात होते हैं, उनका कोई भरोसा नहीं होता, वह एक सूरते मुत्ख़य्यला होती है, जिसका ख़्याल इस ताक़त के साथ दिमाग़ के अन्दर उतर आता है कि आदमी यह समझ जाता है कि हमने मुलाक़ात की, ज़ियारत की, हालांकि वह सिर्फ़ सूरते मुत्ख़य्यला होती है, कुछ भी नहीं होता, तो इसमें आदमी धोखे में पड़ता है और अगर नहीं भी पड़ता है तो अपनी बुज़ुर्गी जतलाने के लिए लोगों को धोखे में डालता है, इसलिए भी यह इन्तिहाई ख़तरनाक बात है।

सबक़ आमोज़ वाक़्यातः

दिल्ली में हमारे ख़ुसर साहब के एक ताल्लुक़ वाले थे, उन्होंने अपना एक अजीब वाक़्या सुनाया, वह बिदअती ज़हन के थे और हफ़्ते में एक दिन अपने घर की सफ़ाई करते थे, वह यह समझते थे कि अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) हर हफ़्ते उनके यहां तशरीफ़ लाते हैं और सिर्फ़ समझते ही नहीं थे बल्कि वह कहते थे कि मैं अपनी आंखों से मुशाहिदा करता हूं कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) तशरीफ़ लाते हैं, उनके साथ अम्बिया और औलिया होते हैं और यह सिलसिला मुद्दतों जारी रहा, उन्हें इस पर पूरा यक़ीन था। कहने लगे कि एक बार मुझे यह ख़्याल हुआ कि आप हमेशा तशरीफ़ लाते हैं, मैं कोई तोहफ़ा नहीं पेश कर पाता, मुझे कोई तोहफ़ा पेश करना चाहिए, लिहाज़ा वह सोचने लगे कि मैं आपकी ख़िदमत में क्या दे सकता हूं, तो उनके ज़हन में यह बात आयी कि मैं सूरह यासीन का तोहफ़ा पेश करूं, कहने लगे कि मैंने सूरह यासीन पढ़नी शुरू की तो उसका कुछ हिस्सा ही तिलावत किया था कि मुझे अजीब सा लगा, मैं जो समझता था कि मेरे सामने अर्श है और फ़र्श है और यह हज़रात इस पर तशरीफ़ फ़रमा हैं, मेरी आधी सूरह यासीन ही होती थी कि मुझे ऐसा लगा कि वह सब ग़ायब हो रहा है और जिनको मैंने बुज़ुर्ग समझा था, दाएं–बाएं से वह सब एक–एक करके ग़ायब होना शुरू हो गए, मुझे बड़ा अजीब सा लगा लेकिन पढ़ता रहा, कहते हैं कि जब मैंने सूरह यासीन मुकम्मल की तो मैं क्या देखता हूं कि मैं जिसके बारे में यह समझता था कि यह अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) हैं, अपनी आंखों से मैं यह यक़ीन करता था कि मैं उन्हें देख रहा हूं और मैं उनकी ज़ियारत कर रहा हूं, वहां पर मुझे एक अजीब सी शक्ल नज़र आयी।

एहतियात की ज़रूरतः

वाक़्या यह है कि इस सिलसिले में ऐसे–ऐसे धोखे होते हैं कि आदमी समझता है कि मैंने अपनी आंखों से देखा, हालांकि यह ऐसी हक़ीक़तें हैं कि आदमी उनको जानता नहीं और धोखा खाता है, इसलिए इसमें बड़ी एहतियात की ज़रूरत है। आदमी की आंखों ने जो नहीं देखा वह लोगों के सामने बयान न करे और अपनी आंखों को न दिखाए, दिखाने का मसला यह है कि वही सूरते मुत्ख़य्यला है जो देख नहीं रहा है वह दिख रहा है। इस ज़ोर से उसका तसव्वुर दिमाग़ में

ला रहा है कि सोचते–सोचते वह समझने लगा कि गोया मैं देख रहा हूं, हालांकि कुछ भी नहीं देख रहा है, तो यह धोखे हैं, उनमें पड़ना ठीक नहीं, लेकिन बहुत से लोग धोखे में पड़ जाते हैं और बुजुर्गी के क़ायल हो जाते हैं। हालांकि यह फ़रेब है। इन चक्करों में पड़ना नहीं चाहिए, इसमें बहुत एहतियात की ज़रूरत है।

बद्तरीन ख़यानतः

(हज़रत सुफ़ियान बिन असीद हज़रमी (रज़ि0) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को फ़रमाते हुए सुना है कि बदतरीन ख़यानत यह है कि तुम अपने भाई से ऐसी बात करो जिसमें वह तुमको सच्चा समझ रहा हो, हालांकि तुम उससे झूठ बोल रहे हो)

(सुनन अबी दाऊदः 4973)

इस हदीस में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपने भाई से कोई बात करो और वह तुम पर भरोसा करके तुम्हें सच्चा समझ रहा हो, हालांकि तुम उससे झूठ बोल रहे हो, तो यह इन्तिहाई ख़यानत की बात है, आम तौर पर यह उन लोगों के साथ होता है जिन पर समाज को एतमाद होता है, लोग उनको बड़ा समझते हैं, दीनदार समझते हैं और उनकी बातों को सच जानते हैं, लेकिन ख़ुद उनका हाल यह होता है कि वह ग़लत बातें बयान करते हैं और उसके भी कुछ मक़सद होते हैं, जैसेः अपनी बड़ाई जताने के लिए, अपनी बुज़ुर्गी के मुज़ाहिरे के लिए, या कभी किसी ज़ाहिरी माद्दी मुनाफ़े के लिए, लोगों का यह अजीब–ग़रीब माद्दी मिज़ाज होता है, जो लोग दीनदार नज़र आते हैं, कभी–कभी उनका भी यह माद्दी मिज़ाज होता है, इसीलिए तन्हा ज़ाहिरी दीनदार काफ़ी नहीं, बल्कि सबसे बड़ी बात यह है कि आदमी कितना सच बोलता है, लिहाज़ा किसी की ज़ाहिरी वज़अ–क़तअ देखकर, उसकी बातों से मुतास्सिर होकर, कोई शख़्स आला क़िस्म की तक़रीर कर रहा है, कोई दुआ में रुला रहा है और रो रहा है, यह सारी बातें ऐसी हैं जो बुज़ुर्गी और सच्चाई की कोई अलामत नहीं है, सच्चाई की जो अलामत है वह अल्लाह के नबी (स0अ0व0) की पैरवी है, यह देखना चाहिए कि सुन्नतों का एहतिमाम कितना ज़्यादा है और उसमें सबसे बड़ी बात यह है कि ज़बान की कितनी एहतियात है, उसका कितना सही इस्तेमाल है और कितना ग़लत इस्तेमाल है, यह बात ऐसी है कि एक अलामत के तौर पर देखी जा सकती है, जांची जा सकती है और उसके बग़ैर देखे आदमी किसी चीज़ पर मुतास्सिर हो जाए तो उसका कोई भरोसा नहीं।

दोहरा गुनाहः

हदीस शरीफ़ में फ़रमाया गया कि बड़ी ख़यानत की बात है कि बेचारा एक शख़्स तुम्हें अच्छा समझ रहा हो, सच्चा समझ रहा है और तुम्हारी बात पर यक़ीन कर रहा है, मगर तुम्हारा हाल यह है कि तुम उसको झूठ बातें बता रहे हो, उसको फ़रेब में रख रहे हो, धोखा दे रहे हो। बहुत सी चीज़ें ऐसी होती हैं जो माद्दी मुनाफ़े के लिए होती हैं, बेचारा कोई कारोबारी आदमी आपसे कुछ पूछने के लिए इस नियत से आया है कि तुम सच्चे आदमी हो, झूठ नहीं बोलते, आकर वह पूंछ रहा है कि फ़लां के बारे में आप क्या जानते हैं? उसके बारे में आप ख़ूब जानते हैं कि वह धोखेबाज़ है, लेकिन फिर भी आपने उसकी बड़ी तारीफ़ कर दी कि वह बहुत अच्छा और साफ़–सुथरा आदमी है, मामला सही करता है, तुम जाकर अपना मामला उसी से कर लो और तुम्हारे दिल में यह छुपा है कि जब उसका मामला होगा तो कुछ फ़ायदा उसको भी होगा और हमारा भी कुछ कमीशन हो जाएगा, क्योंकि आजकल कमीशन पर भी काम होते हैं। बहरहाल किसी भी नफ़े के लिए, चाहे इज़्ज़त का फ़ायदा नज़र आता हो, अगर उसकी तरह कोई करता हो तो इन्तिहाई ख़तरनाक बात है। यह सिर्फ़ झूठ नहीं है बल्कि ख़यानत है। ख़यानत इसलिए कि वह बेचारा तुम्हें अमीन समझ रहा है, अमानतदार समझकर बात कर रहा है और तुम उसके साथ बातचीत में ख़यानत कर रहे हो, गोया उसे धोखा दे रहे हो, वह तुम्हारी बात पर यक़ीन करके किसी से मामला करना चाहता है, या तुम ही को बुज़ुर्ग समझकर वह कुछ हासिल करना चाहता है और तुम उसके साथ धोखा कर रहे हो, तो यह एक बड़ी ख़यानत की बात है, तन्हा सिर्फ़ झूठ नहीं है।

सदक़ा–ए–फ़ित्र के चन्द मसाएल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

सदक़ा–ए–फ़ित्र उस सदक़े का नाम है जो ईदुल फ़ित्र के दिन नमाज़ के लिए निकलने से पहले अदा किया जाता है, उसका अदा करना वाजिब है, ज़कात की तरह फ़र्ज़ नहीं है लेकिन हदीसों में इसकी बड़ी ताकीद आयी है। इसीलिए हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) फ़रमाते हैं नबी करीम (स0अ0व0) ने ज़कात–फ़ित्र मुसलमान गुलाम आज़ाद, मर्द–औरत और छोटे–बड़े पर एक सा खजूर या एक सा जौ तय किया है और उसके बारे हुक्म दिया कि लोगों के नमाज़ के लिए निकलने से पहले अदा कर दी जाए।

(बुख़ारी–503 / मुस्लिम–984)

और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) ने रमज़ानुल मुबारक के आख़िर में इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग अपने रोज़े का सदक़ा निकालो। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने यह सदक़ा खजूर या जौ से एक सा और गेहूं से आधा सा हर आज़ाद–गुलाम, मर्द–औरत और छोटे–बड़े पर मुक़र्रर फ़रमाया है।

(नसाई–1580, अबूदाऊद–1522)

और इस सदक़े की हिकमत बयान करते हुए रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने दो चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया कि एक तो यह कि रोज़े में अगर कोई कोताही हो जाए तो उस सदक़े से उसकी तलाफ़ी हो जाती है और दूसरी यह कि उससे ग़रीब और नादार लोगों को भी खाने–पीने का सामान मुहैया हो जाता है। इसीलिए हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने सदक़ा–ए–फ़ित्र को रोज़ादार को लग्व और बेहयाई से पाक करने और मिस्कीनों के खाने का इन्तिज़ाम करने के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है। (अबूदाऊदः 1609, इब्ने माजाः 1827)

सदक़ा–ए–फ़ित्र किस पर वाजिब है?

सदक़ा–ए–फ़ित्र भी इबादात में से है, लिहाज़ा इसके वजूब के लिए भी मुसलमान होना शर्त है। काफ़िर पर वाजिब नहीं है। इसी तरह इसके लिए आज़ाद होना शर्त है, गुलाम पर वाजिब नहीं। अलबत्ता इसके लिए आक़िल–बालिग़ होने की शर्त नहीं है। इसीलिए अगर यह साहिबे निसाब हो तो उनके माल से सदक़ा–ए–फ़ित्र निकाला जाएगा। इसी तरह सदक़ा–ए–फ़ित्र के वजूब के लिए रोज़ादार होने की भी शर्त नहीं है। इसीलिए अगर कोई रोज़ा नहीं भी रखता है तब भी अगर वह साहिबे निसाब है तो उस पर सदक़ा–ए–फ़ित्र वाजिब हो जाएगा। अलबत्ता सदक़ा–ए–फ़ित्र सिर्फ़ साहिबे निसाब पर वाजिब होता है। (हिन्दियाः 191, बदाएः 2 / 198)

सदक़ा–ए–फ़ित्र का साहिब–ए–निसाब

सदक़ा–ए–फ़ित्र सिर्फ़ उस पर वाजिब होता है जो शरई एतबार से मालदार हो और शरई तौर से मालदार वह है जो साहिबे निसाब हो यानि हवाएज अस्लिया (ज़रूरी ज़रूरतों) के अलावा 612.36 ग्राम चांदी या 87.48 ग्राम सोने या उन दोनों में से किसी के बराबर रुपये या सामान–ए–तिजारत का मालिक हो, यही ज़कात का भी निसाब है। लेकिन सदक़ा–ए–फ़ित्र और ज़कात के निसाब में दो बुनियादी फ़र्क़ है, एक तो यह कि सदक़ा–ए–फ़ित्र में माल पर साल गुज़रना शर्त नहीं है और ज़कात में शर्त है। दूसरा फ़र्क़ यह है कि ज़कात में माल नामी होना शर्त यानि या सोना–चांदी हो या माल–ए–तिजारत हो जबकि सदक़–ए–फ़ित्र में यह शर्त नहीं है। चुनान्चे अगर किसी के पास सिर्फ़ एक मकान रहने के लिए है तो वह चाहे कितना ही क़ीमती हो उस पर ज़कात वाजिब होगी न सदक़ा–ए–फ़ित्र, इसलिए कि वह हाजत–ए–अस्लिया में शामिल है लेकिन अगर इस

मकान के अलावा दूसरा मकान भी है जिसको किराये पर उठा रखा है या ऐसे ही छोड़ रखा है तो उस पर ज़कात नहीं होगी। इसलिए कि उसमें बढ़ोत्तरी नहीं है। लेकिन अगर वह निसाब तक पहुंच रहा है तो उसके सबब सदक़ा–ए–फ़ित्र वाजिब होगा।

यहां सदक़ा–ए–फ़ित्र का जो निसाब बताया गया है, यही कुर्बानी के वजूद का भी निसाब है और इसी निसाब का मालिक होने पर ज़कात व सदक़ात लेना हराम हो जाता है और रिश्तेदारों का नफ़्क़ा वाजिब हो जाता है। (शामीः 2/79)

वजूब–ए–फ़ित्रा का वक़्तः

फ़ित्रा के वजूब का वक़्त ईदुल फ़ित्र के दिन तुलूअ–ए–फ़ज्र का वक़्त है। इसीलिए अगर सूरज निकलने से पहले–पहले बच्चा पैदा हुआ तो उसका सदक़ा–ए–फ़ित्र वाजिब हो जाएगा और अगर सूरज निकलने के बाद पैदा हुआ तो वाजिब नहीं होगा। और अगर किसी का इंतिक़ाल तुलूअ–ए–फ़ज्र के पहले हो जाए तो उसका सदक़ा–ए–फ़ित्र वाजिब नहीं होगा और अगर उसके बाद इंतिक़ाल हुआ तो वाजिब हो जाएगा। (बदाएः 2/206)

मुस्तहब वक़्तः

मुस्तहब यह है कि ईदुल फ़ित्र के दिन ईद की नमाज़ के लिए जाने से पहले–पहले सदक़ा–ए–फ़ित्र अदा कर दिया जाए। इसीलिए हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ईदुल फ़ित्र के दिन नमाज़ के लिए जाने से पहले ज़कात (यानि सदक़ा–ए–फ़ित्र) निकालने का हुक्म देते थे। (तिरमिज़ीः 677, बुख़ारीः 1503)

और ईद के दिन के पहले–पहले रमज़ानुल मुबारक के अन्दर फ़ित्रा निकाल देना भी जाएज़ है बल्कि इस एतबार से बेहतर है कि मोहताज ईद आने से पहले ही अपनी ज़रूरत की चीज़ें हासिल कर लेगा लेकिन क्या रमज़ान से पहले भी सदक़ा–ए–फ़ित्र अदा किया जा सकता है? एक क़ौल इसके जवाज़ का भी है लेकिन एहतियात इसी में है कि रमज़ान से पहले न निकाले और अगर ईदुल फ़ित्र को अदायगी नहीं की तो वजूब साक़ित नहीं होगा। बाद में भी निकालना वाजिब ही रहेगा। (हिन्दियाः 1/192, शामीः 2/95)

सदक़ा–ए–फ़ित्र की मिक़्दारः

अगर गेहूं से अदायगी करनी है तो आधा सा निकाला जाएगा। लेकिन अगर जौ, खजूर या किशमिश से निकाला जाएगा तो पूरा सा निकालना होगा। निस्फ़ सा 1 किलो 633 ग्राम के बराबर होता है लेकिन ज़हन में रहे कि सा की मिक़्दार के सिलसिले में और अक़्वाल भी हैं। (हिन्दियाः 192)

किसकी तरफ़ से निकालना हैः

अगर कोई शख़्स साहिबे निसाब हो तो उसको अपनी तरफ़ से और अपने नाबालिग़ बच्चों–बच्चियों की तरफ़ से सदक़ा–ए–फ़ित्र निकालना वाजिब है। अगर औलाद बालिग़ है लेकिन मजनून या कमअक़्ल है तो उसकी तरफ़ से भी सदक़ा–ए–फ़ित्र निकालना वाजिब होगा। और अगर नाबालिग़ या मजनून औलाद ख़ुद मालदार हो तो बाप उनके माल से उनका सदक़ा–ए–फ़ित्र निकालेगा। औलाद आक़िल–बालिग़ हो तो उसका सदक़ा–ए–फ़ित्र निकालना बाप पर वाजिब नहीं है लेकिन अगर यह उसके साथ ही रहते हों और उसी की किफ़ालत में हो तो उसकी तरफ़ से बिला इजाज़त भी निकाल दें तो अदा हो जाएगा। बीवी की तरफ़ से निकालना भी शौहर पर वाजिब नहीं है। लेकिन अगर निकाल दे तो अदा हो जाएगा। (हिन्दियाः 192)

किसी और जिन्स से फ़ित्रा देनाः

अगर ऊपर दी गयी चीज़ों के अलावा फ़ित्रा देना चाहे तो दे सकता है। लेकिन अगर किसी और चीज़ से देना हो तो उन मन्सूस चीज़ों में से किसी की बाज़ारी क़ीमत के एतबार से देना होगा यानि आधा सा गेहूं या एक सा जौ या खजूर, किशमिश की जो क़ीमत हो, उसके एतबार से रक़म या चावल या कोई और चीज़ दी जाए। (शामीः 2/83)

साहिबे हैसियत लोगों को मशविराः

ऊपर फ़ित्रे की जो मिक़्दार बतायी गयी है उसके मुताबिक़ सदक़ा–ए–फ़ित्र अदा किया जाए तो अदा

हो जाएगी, लेकिन आधा सा गेहूं की क़ीमत आजकल बहुत कम होती है, इसलिए अगर अल्लाह ने किसी को वुसअत दे रखी है तो वह गेहूं के बजाए अगर खजूर या किशमिश से निकाले, या दरमियानी हैसियत है तो जौ से निकाले तो इसमें इंशाअल्लाह सवाब होगा। यह भी याद रखना चाहिए कि जो मिक़दार बतायी गयी है, उससे कम न होना चाहिए, लेकिन उससे बढ़ा देने में कोई हर्ज नहीं है, इसीलिए हज़रत अली (रज़ि0) ने गेहूं से भी एक सा निकालने का मशविरा दिया था।

(अबूदाऊदः 1622, नसाईः 2515)

सदक़ा–ए–फ़ित्र का मसरफ़ः

सदक़ा–ए–फ़ित्र का मसरफ़ वही है जो ज़कात का है। (हिन्दियाः 1/1941, शामीः 2/86)

लिहाज़ा इसको मस्जिद वग़ैरह की तामीर में लगाना या उससे तन्ख़्वाह वग़ैरह अदा करना ठीक नहीं होगा।

बेहतर यह है कि एक शख़्स का सदक़ा–ए–फ़ित्र एक मोहताज को दिया जाए, एक शख़्स का सदक़ा–ए–फ़ित्र कई फ़क़ीरों पर तक़सीम करना मकरूह तन्ज़ीही है, अलबत्ता कई लोगों का सदक़ा–ए–फ़ित्र एक फ़क़ीर को दिया जा सकता है।

(शामीः 2/85)

सदक़ा–ए–फ़ित्र के मुतफ़र्रिक़ मसाएलः

1. ज़कात ही की तरह फ़ित्रा भी सादात को देना नाजाएज़ है। (हिन्दियाः 189)

2. सदक़ा–ए–फ़ित्र काफ़िर मोहताज को देने की गुंजाइश लेकिन बेहतर यही है कि मुसलमान को दिया जाए। (शामीः 2/86)

3. अगर कोई शख़्स सऊदी या अमरीका वग़ैरह में मुक़ीम हो और वह चाहता है कि उसका फ़ित्रा हिन्दुस्तान में क़ीमत से अदा किया जाए तो ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन इस सूरत में हिन्दुस्तान की क़ीमत के बजाए जहां वह मुक़ीम है वहां की क़ीमत का एतबार किया जाएगा। (अलवलवालजियाः 244)

इसी तरह अगर कोई शख़्स सफ़र की हालत में है तो वह जहां हो वहां की क़ीमत के एतबार से सदक़ा निकालेगा। (अलवलवालजियाः 244)

शेषः मानवता का निर्माण

इच्छाओं को पूरा करना सुकून का रास्ता नहीं: आज दुनिया की सारी रियासतें और हुकूमतें इसी केन्द्र बिन्दु पर घूम रही हैं कि क़ौमों और जातियों को हर प्रकार से संतुष्ट किया जाए तथा इच्छाओं को पूरा किया जाए। लेकिन दाना याने फ़िरंग! यह सुधार और सुकून का रास्ता नहीं। यहां एक व्यक्ति की ख़्वाहिश भी पूरी होना मुश्किल है। ख़्वाहिशों का यह हाल है कि वह असीमित हैं और दुनिया का यह हाल है कि वह सीमित तथा करोड़ो मनुष्यों के लिए एकसमान है। वाक़्यों की दुनिया में आकर देखिए तो इस दुनिया में हक़ीक़त में आदमी की मुंहमांगी ख़्वाहिशों को भी पूरा करने की ख़्वाहिश नहीं। यहां किसी इन्सान की हवस पूरी नहीं हो सकती है। यहां मन की संतुष्टि का इच्छुक पुकार–पुकार कर कह रहा है:

दरियाए मआसी तन्क आबी से हवा ख़ुश्क
मेरा सरदामन भी अभी तर न हुआ था।

आज दुनिया के बड़े–बड़े रहनुमा कह रहे हैं कि इन्सानी ख़्वाहिशें सब जाएज़ और स्वाभाविक हैं। सबको पूरा होना चाहिए और इसी पर सारी दुनिया में अमल हो रहा है।

दोस्तो! यही बुनियादी ग़लती है। इच्छाओं की पूर्ति से इच्छाओं में कमी, और दिल में सुकून पैदा नहीं होगा। यह तो समन्दर का खारा पानी है, जिस क़दर उससे प्यास बुझाएगा, प्यास भड़केगी। आज सारी दुनिया में सरकारें, संस्थाएं और सभ्यताएं इसी सिद्धान्त पर चल रही हैं कि इन्सानों की सही–ग़लत इच्छाओं की पूर्ति का साधन पैदा किया जाए। राष्ट्र, वर्ग विशेष, कोई समूह या कोई व्यक्ति जो कुछ मांगे उनको दिया जाए। इससे सुकून पैदा होगा, अमन क़ायम होगा, लेकिन नतीजा बिल्कुल उल्टा है। आज हर तरफ़ आग लगी हुई है। दिल की लगी किसी से बुझती नहीं। ख़्वाहिशों का एक ऐसा अलाव जल रहा है और उसमें हर क़ौम ईंधन डालती चली जा रही है और उसको हवा दे रही है। आज उसके शोले आसमान से बातें करने लगे हैं और क़ौमों और मुल्कों की तरफ़ लपक रहे हैं। आज "उसके ईंधन आदमी और पत्थर हैं" का मंज़र नज़र आ रहा है। लोग उस आग की शिकायत करते हैं। मगर सोचने की बात यह है कि यह आग किसने जलाई? यह अलाव किसने रोशन किया? इस पर तेल किसने छिड़का? इसमें ईंधन कौन डाल रहा है? इच्छाओं की पूर्ति द्वारा सुकून पाने के रास्ते का यही अंजाम और मंज़िल है।

Capitalism
पूंजीवाद

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

"Capitalism: an economic system in which a country's businesses and industry are controlled and run for profit by private owners rather than by the government."

आक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी के अनुसारः "पूंजीवादी व्यवस्था वह आर्थिक व्यवस्था है जिसमें वस्तुओं की पैदावार तथा बंटवारा सरकार के बजाए निजी पूंजी निवेश तथा लाभ प्राप्ति पर आधारित होती है।"

पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत पूंजीपतियों का पैदावार के साधनों तथा उसकी आमदनी पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण होता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत लाभ कमाने की कोई सीमा तय नहीं होती। आमदनी की अधिकता कम्पनी को मज़बूत करती है और मज़बूत कम्पनी को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने की धुन होती है।

कम्पनी की मिल्कियत निजी भी हो सकती है तथा सामूहिक भी। सामूहिक मिल्कियत को कार्पोरेशन (Corporation) कहा जाता है। इसमें शेयर होल्डर्स (अंतिम भ्वसकमते) मालिक होते हैं। एक शेयर होल्डर का कम्पनी पर कितना कन्ट्रोल होता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह कितने प्रतिशत शेयर यानि हिस्से का मालिक है। यह शेयर होल्डर्स बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स (Board of Directors) का चुनाव करते हैं तथा कम्पनी को चलाने के लिए श्रेष्ठ स्तर के एक्ज़िक्यूटिव्ज़ की सेवा लेते हैं।

पूंजीवादी व्यवस्था की सफलता का संबंध स्वतन्त्र बाज़ार से होता है। जहां मांग तथा आपूर्ति के नियम (Law of Demand & Supply) के अनुसार वस्तुओं तथा सेवाओं का बंटवारा होता है। मांग की नियम के अनुसार से जब किसी वस्तु की मांग बढ़ती है तो उसका मूल्य बढ़ जाती है। जब मुक़ाबला करने वाले (Competitors) यह समझते हैं कि अधिक लाभ कमा सकते हैं, तो वह पैदावार में बढ़ोत्तरी करते हैं। अधिक उपलब्धता (Supply) मूल्य को उस सतह तक कम कर देती है जहां केवल मालदार हरीफ़ शेष रह जाते हैं।

पूंजीवाद की उन्नति इस बात पर आधारित होती है कि काम करने वालों का रहने–खाने का ख़र्च कम हो तथा माहौल काम करने के लिए अनुकूल हो, वरना जहां कम लाभ की प्राप्ति का ख़तरा हो या काम न कर पाने का भय हो, ऐसी जगहों पर पूंजीवादी उद्योग बाक़ी नहीं रह पाते। विशेष रूप से ऐसे क्षेत्र जहां युद्ध चलते रहते हैं या जैसे साउथ अफ़्रीक़ा या साउथ अमेरिका के कुछ देश।

यूरोप के इतिहास में सोलहंवी सदी इस रूप में महत्वपूर्ण है कि इसमें यूरोप इतिहास की सबसे बड़ी महामारी "काला प्लेग" की चपेट में रहा। इस महामारी में यूरोप की लगभग दो तिहाई आबादी मौत के घाट उतर गयी। इस महामारी की गंभीरता का अनुमान इस रूप में भी किया जा सकता है कि इसके प्रभाव मध्य एशिया, चीन तथा भारत पर भी पड़े तथा सामूहिक विनाश में कम से कम सात करोड़ पचास लाख लोग मारे गए। मानवीय जानों की इतनी बड़ी तबाही के कारणवश इस महामारी को "काली मौत" (Black Death) भी कहा जाता है। इस तबाही के बाद यूरोप में व्यापारियों का एक नया वर्ग अस्तित्व में आया जिसने विदेशों से व्यापारिक संबंध बनाना शुरू किये। निर्यात की इस नई मांग ने क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को बहुत नुक़सान पहुंचाया, जिसका सीधा असर वस्तुओं की सामूहिक पैदावार तथा मूल्यों के निर्धारण पर पड़ा, यहीं से पूंजीवाद के विचार की आधारशिला पड़ी जिससे पश्चिमी उपनिवेशवाद ने ख़ूब फ़ायदा उठाया।

ब्लैक डेथ के बाद यूरोप में जिस आर्थिक क्रान्ति ने दस्तक दी, अट्ठारहंवी सदी तक उसकी गूंज पूरे यूरोप में सुनाई देने लगी, और विशेषरूप से एक औद्योगिक देश में परिवर्तित हो गया, फिर वहां के धुआंदार कारख़ानों तथा टेक्सटाइल मिलों के अन्दर से पूंजीवाद का नया नज़रिया सामने आया।

1776ई0 के स्कॉटलैंड के अर्थशास्त्री एडम स्मिथ

(Adam Smith) ने "An Inquiry into the Nature and Causes of the Wealth of Nations" नामक विषय से एक शोध प्रस्तुत किया। इस शोध के आधार पर नवीन पूंजीवाद की इमारत खड़ी है। स्मिथ के कुछ नियमों से एक्सपर्ट के मतभेद के बावजूद स्मिथ को ही "फ़ादर ऑफ़ कैपिटलिज़्म" कहा जाता है।

पूंजीवाद में सप्लाई वाले यानि औद्योगिक लोग' सबसे अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से मुक़ाबला करते हैं, वह अपने मूल्यों को संभव हद तक कम करने का प्रयास करते हैं मगर अपने सामान को सबसे ज़्यादा मुमकिना क़ीमत पर बेचते हैं। प्रतिस्पर्द्धा का क्रम मूल्यों को संतुलित तथा पैदावार को प्रभावित रखती है, हालांकि यह मज़दूरों के शोषण तथा ख़राब परिस्थिति का कारण बनती है, विशेषतयः उन देशों में मजदूरों के हित के लिए कठोर क़ानून नहीं है।

पूंजीवाद की नवीन व्यवस्था शासन के दख़ल के परे हटकर स्थापित है अर्थात नियम के अनुसार शासन को पूंजीवाद के हर मामले से हाथ निकाल लेना चाहिए और सिर्फ़ न्याय को स्थापित रखने के लिए दखल देना चाहिए, जिसे स्पेम्र.थ्यतम कहते हैं यानि शासन का किरदार केवल इतना बाक़ी रहे कि स्वतन्त्र बाज़ार को इजादारों या उमराए शाही से सुरक्षा उपलब्ध कराए तथा न्याय की स्थापना करे। चूंकि शासन देश के बुनियादी ढांचे को बरक़रार रखने के लिए पूंजीवादी लाभ तथा आमदनी पर टैक्स लगाती है। इस रूप से मार्केट की सुरक्षा एक शासकीय ज़िम्मेदारी है। फिर उससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार भी आसान हो जाता है।

पूंजीवाद के लाभ इस रूप में सामने आते हैं कि लोगों को सस्ती क़ीमतों में बेहतरीन सामान उपलब्ध होता है तथा फिर मूल्य व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण से भी कम होती हैं। हालांकि व्यापार में लोग अपनी इच्छा की चीज़ को पाने के लिए अधिक से अधिक मूल्य की अदायगी कर सकते हैं।

आर्थिक उन्नति में सबसे महत्वपूर्ण रोल पूंजीवाद का नवीनीकरण (Innovation) है, जिसमें नई वस्तुओं तथा अधिक प्रभावी औद्योगिक तरीक़े शामिल हैं। ऐपल कम्प्यूटर कम्पनी का मालिक स्टीव जाब्स (Steve Jobs) ग्राहक की मांग को पूरा करने में प्रथम रहने के संबंध में कहता है: "आप बिल्कुल यह नहीं कर सकते हैं कि ग्राहक से पहले पूंछे कि उन्हें क्या चाहिए फिर उस चीज़ को बना कर दें, क्योंकि जब उसको बना चुके होंगे, ग्राहक को कुछ और ही चाहिये होगा।"

स्वतन्त्र तथा न्यायपूर्ण बाज़ार के विचार तथा उद्देश्य के बावजूद पूंजीवाद अवसर प्रदान नहीं करती। जिन लोगों को अच्छी खाद्य सामग्री, सहयोग तथा शिक्षा न मिली हो, ऐसे लोग कभी मण्डी का मुंह नहीं देख पाते तथा समाज उन ग़रीब लोगों की योग्यता तथा कार्यक्षमता से वंचित रह जाता है तथा अगर किसी वर्ग में उनको काम मिल भी जाता है तो योग्यता से कम मेहनताना, उन्नति की सीमित संभावना तथा संभव रूप से असुरक्षा में काम करने के हालात का सामना करना पड़ सकता है।

असमानता पूंजीवादियों के लिए बेहतरीन अवसर साबित होता है। असमानता के कारण से प्रतिस्पर्द्धा का ख़तरा भी कम होते हैं और फिर अपनी ताक़त के इस्तेमाल से प्रतिस्पर्द्धा के नये प्रवेश पर रुकावटें पैदा करके व्यवस्था में धांधली करते हैं।

पूंजीवादियों की पीठ पर आम तौर पर राजनीतिक पार्टियां होती हैं जो चंदे के रुप में भारी क़ीमत वसूल करती हैं। इसके बदले में यह राजनीतिक पार्टियां देश में ऐसी पूंजीवादी पॉलिसी का समर्थन करती हैं जिनसे उन कारोबारियों को फ़ायदा पहुंचता है, उनके माल–दौलत में बढ़ोत्तरी होती है।

इस व्यवस्था का आधारभूत नुक़सान यह है कि इससे वही लोग लाभान्वित होते हैं जो पहले ही से मालदार हों और राजनीतिक ताक़त रखते हों। इस व्यवस्था में ग़रीब या प्रतिस्पर्द्धा की योग्यता न रखने वाले के लिए जगह नहीं होती है। जैसे बूढ़े, बच्चे, उन्नति से वंचित और देखभाल करने वाले, अर्थात इस व्यवस्था के द्वारा अमीर की अमीरी में तथा ग़रीब की ग़रीबी में बढ़ोत्तरी होती है। इसीलिए शासन की ऐसी पॉलिसियों की सख़्त ज़रूरत होती है जो अमीर व ग़रीब के बीच बढ़ती हुई खाई को पाट सकें।

मौलाना अली मियां का
इश्तिग़ाल-ए-हदीस

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

मुफ़क्किर–ए–इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह0) को हदीस का ज़ौक़ विरासत में अता हुआ था। उनके वालिद मौलाना हकीम सैय्यद अब्दुल हयि हसनी का शुमार नामवर मुहद्दिसीन में होता है। यही वजह है कि मौलाना का ज़ाति कुतुबख़ाना हदीस की नायाब व मुन्तख़िब तालीफ़ात का एक बेहतरीन मजमूआ था, जिसमें ख़ानदानी बुज़ुर्गों के नादिर व वक़ीअ क़ल्मी मुस्व्वदात मौजूद थे और मुहद्दिसीन अज़्ज़ाम की शहर आफ़ाक़ तस्नीफ़ात भी। इसीलिए सन्ने शऊर से बुलन्द पाया मुहद्दिसीन की तालीफ़ात हज़रत मौलाना के ज़ेरे मुताला रहीं। दिन में हाफ़िज़ मन्ज़री की किताब अत्तरग़ीब (अल तरग़ीब व अल तरहीब) हाफ़िज़ इब्ने क़य्यूम की ज़ादुल माल और मुहम्मद बिन नस्र मौरूज़ी की किताब क़यामुल्लैल ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं। ग़फ़वाने शबाब में इन बेशक़ीमत कुतुब के मुताले ने मौलाना के अन्दर महज़ हदीस का ज़ौक़ ही पैदा नहीं किया बल्कि इस्लाहे बातिन व तज़किया–ए–नफ़्स के बाब में एक रूहानी मुर्शिद का भी काम किया। मुताले हदीस की सरगुज़्शत में हज़रत मौलाना का ख़ुद यह एतराफ़ हैः

"इब्तिदा–ए–शबाब में इस तरह की किताबें जिनमें मुअस्सिर वाक़्यात और रिवायात और जिनसे इबादत का ज़ौक़ पैदा हो, एक मुर्शिद का काम देती हैं।"

(मेरी इल्मी व मुतालआती ज़िन्दगीः 15)

हज़रत मौलाना की तश्कील–ए–सीरत का एक इम्तियाज़ यह भी है कि उन्हें मख़लूत निसाबे तालीम पढ़ने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ बल्कि उन्होंने हर फ़न की तालीम अलग–अलग और हज़्बे ज़ौक़ हासिल की। मौलाना का हदीस से बाक़ायदा पहला तारूफ़ सही मुस्लिम की किताबुल जिहाद से हुआ जो उन्होंने अपने महबूब उस्ताद शेख़ ख़लील बिन मुहम्मद अरब से तफ्सीर के असबाक़ और अरबी अदब के साथ–साथ पढ़ी थी। फिर 1929 में मौलाना ने तफ़सीर–ए–अरबी अदब और नहू व सर्फ़ की बुनियादी तालीम के बाद दारूल उलूम नदवतुल उलमा में मुकम्मल दो साल बाज़ाब्ता तहसीले हदीस में ही वक़्फ़ किये। इस ज़माने में आप ने मौलाना हैदर हसन ख़ान साहब की सोहबत को लाज़िम पकड़ा जो हज़रत मौलाना के वालिद माजिद के हमदर्स और जलीलुल क़द्र मुहद्दिस शेख़ हुसैन बिन मोहसिन अन्सारी यमनी के शार्गिदे रशीद थे। उस ज़माने में हज़रत मौलाना ने उनके मुहद्दिसाना व मुहक़्क़िाना मिज़ाज से ख़ूब इस्तिफ़ादा किया। वह अपने मुताला–ए–हदीस की सरगुज़िश्त में रक़मतराज़ हैं।

"मैंने मौलाना से दारुल उलूम में सही बुख़ारी व मुस्लिम और अबूदाऊद, तिरमिज़ी हरफ़न–हरफ़न पढ़ी। मेरी हदीस की तालीम सरापा उनकी शफ़क़त और महारते फ़न की मरहूने मिन्नत है।"

(कारवान–ए–ज़िन्दगीः 111)

हज़रत मौलाना ने हदीस से इश्तिग़ाल के लिए मुकम्मल दो साल अपने उस्ताद के कमरे में गोया एतिकाफ़ कर लिया था और अपने शब व रोज़ वहीं गुज़ारे। इस ज़माने में वह अपने उस्ताद के कुतुबख़ाने के मोहतमिम और उनके मुसव्वदात के नाक़िल व मुरत्तिब बन गए थे। अगर मौलाना हैदर हसन ख़ां साहब को रिजाल की किताबों से रुजूअ की ज़रूरत पेश आती तो हज़रत मौलाना ही बहस व तहक़ीक़ के बाद वह मवाद फ़राहम करते। इस कामिल यकसूई व इन्हिमाक का यह फ़ायदा हुआ कि मौलाना को फ़न्ने हदीस की कुतुब व मुहद्दिसीन की तस्नीफ़ात से बराहे रास्त वाक़िफ़ियत हासिल हुई नीज़ मतूने हदीस रिजाले फ़न जिरह व तादील उसूल की किताबों और सुरूहे हदीस से भी गहरी वाक़िफ़ियत हो गयी, इसका नतीजा यह था कि मौलाना का मुताला–ए–हदीस गिने–बंधे मुसन्निफ़ीन या निसाब की किताबों तक महदूद न रहा था और न व कभी किसी इल्मी व दर्सी तास्सुब का शिकार हुए। हज़रत मौलाना को इस तरीक़–ए–तदरीस से फ़ितरी उन्स था। वह ख़ुद लिखते हैंः

"मैंने यह तरीक़ा–ए–दर्स कहीं और नहीं देखा और मेरे ख़्याल में इल्मी हैसियत से उससे ज़्यादा मुफ़ीद और तरक़्क़ी याफ़्ता तरीक़े दर्स नहीं है।"

(मेरी इल्मी व मुतालआती ज़िन्दगीः 15)

1932ई0 में मौलाना अपने बड़े भाई डॉक्टर सैय्यद अब्दुल अली हसनी के ईमां पर चार माह के लिए देवबन्द तशरीफ़ ले गए जहां उन्होंने शेख़ुल इस्लाम

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी (रह0) के हल्क़ा–ए–दर्स में ज़ानुए तिल्मिज़या किया और बुख़ारी व तिरमिज़ी के दुरूस में ख़ास तौर पर शिरकत की। लेकिन मौलाना को देवबन्द के क़याम में अस्ल नफ़ा हज़रत मदनी की ज़ात और उनके बुलन्द औसाफ़ व कमालात से पहुंचा। हज़रत मौलाना लिखते हैं:

"दारुल उलूम के चार माह के क़याम में मेरी दिलबस्तगी का सामान और मेरे उन्स व अक़ीदत का मरकज़ मौलाना मदनी की ज़ात थी और अस्ल मुनासबत उन्हीं से थी।" (कारवान–ए–ज़िन्दगीः 1/130)

1934ई0 में जब हज़रत मौलाना दारुल उलूम नदवतुल उलमा में बहैसियत उस्ताद तक़र्रुर हुआ तो तफ़्सीर व अदब की किताबों के साथ हदीस की बाज़ मन्तही किताबें भी मौलाना के ज़ेरे तदरीस रहीं जिनमें सही बुख़ारी की किताबुल ईमान, किताबुल वही, किताबुल इल्म व तिरमिज़ी शरीफ़ ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं लेकिन असफ़ार की कसरत और नज़र की कमज़ोरी के सबब यह मुबारक सिलसिला जारी न रह सका वरना ख़ुद हज़रत मौलाना का कहना था कि इन किताबों की तदरीस में मेरा ख़ूब जी लगा। और अंदाज़ा हुआ कि अगर मज़ीद मेहनत का मौक़ा मिल जाए तो मैं बुख़ारी शरीफ़ का दर्स बहुस्ने ख़ूबी दे सकता हूं। मौलाना के दर्से हदीस से दारुल उलूम के तलबा भी हद दर्जे मुतमईन थे जिसे देखकर उनके महबूब उस्ताद मौलाना हैदर हसन ख़ान साहब को बहुत ख़ुशी होती थी। हज़रत मौलाना लिखते हैं:

"मौलाना हैदस हसन ख़ां तिरमिज़ी के तलबा से उनका तास्सुर पूछते रहते, एक बार उन्होने तलबा के तासुरात मालूम करके अपने इत्मिनान और ख़ुशनूदी का एतराफ़ फ़रमाया।" (कारवान–ए–ज़िन्दगीः 1/151)

इल्मे हदीस से अमली इश्तिग़ाल के साथ हज़रत मौलाना का फ़ैज़े क़लम भी ख़िदमते हदीस में हमेशा रवां रहा। उन्होंने हिन्दुस्तान के नामवर मुसन्निफ़ीन की किताबों पर अपने क़लम से ऐसे वक़ीअ मुक़द्दमात तहरीर किये जो बजाए ख़ुद एक शाहकार हैं। इनमें ख़ास तौर पर हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया कांधलवी के हुक्म व इसरार पर इनकी किताबों के लिए लिखे गए मुक़द्दमे इल्मे हदीस की एक बड़ी ख़िदमत हैं जिनमें फ़न्ने हदीस का तारुफ़ तारीख़े तदवीने हदीस पर बहस, किताब के इम्तियाज़ात व ख़ुसूसियात और साहिबे किताब के औसाफ़ व कमालात इसकी सरूहात और हर दौर में उसके साथ उम्मत का ऐतिना, ऐसे दिलचस्प अंदाज़ में बयान किया है जो हदीस के तलबा के लिए ख़ास्से की चीज़ है।

हज़रत मौलाना ने मुताले हदीस के उसूल व मुबादी के उनवान से एक रिसाला भी तहरीर किया है जिसमें हदीस की बुनियादें बयान कीं है और सियाहे सत्ता पर सैर हासिल बहस की है। मुबादियाते तदवीने हदीस के साथ मुताले हदीस के अस्ल मक़सद की तरफ़ उम्मत के ख़वास व अवाम की तवज्जे भी मबज़ूल करायी है। नीज़ मुतवाज़िन तर्ज़े फ़िक्र के साथ फ़ुज्जियत हदीस की तश्रीह की है।

हदीसे नबवी उम्मते इस्लामिया के लिए एक नागुज़ीर हक़ीक़त और उसके वजूद के लिए एक लाज़मी शर्त है। उसकी हिफ़ाज़त, तरतीब व तदवीन, हिफ़्ज़ व अशाअत के बग़ैर उम्मत का दीनी व ज़हनी, अमली व अख़्लाक़ी दवाम व तसलसुल बरक़रार नहीं रह सकता था। (मुबादीः 21/20)

1981ई0 में राब्ता–ए–आलम–ए–इस्लामी की दरख़्वास्त पर हज़रत मौलाना ने इस्लामी मिज़ाज व माहौल की तश्कील व हिफ़ाज़त में हदीस का बुनियादी किरदार के उनवान से एक इल्मी व फ़िक्री मुहाज़िरा पेश किया, जिसमें मग़्रिबी मुसन्निफ़ीन व मुस्तश्रिक़ीन से मुतास्सिर जदीद तालीम याफ़्ता तबक़े को सामने रखकर हदीस की अमली क़ीमत व इफ़ादियत साबित की है और इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि हर दौर में हदीस–ए–नबवी (स0अ0व0) उम्मते मुस्लिमा की एक नागुज़ीर ज़रूरत है और उससे रिश्ते का इन्क़िताअ ख़सारा महरूमी की बात है। दर्ज ज़ेल इक़्तिबास मौलाना के इन्तिबाआते ख़ातिर की खुली दलील है:

"जब तक हदीस का ज़ख़ीरा बाक़ी, उससे इस्तिफ़ादा का सिलसिला जारी और उसके ज़रिये से अहदे सहाबा का माहौल महफ़ूज़ है, दीन का यह सही मिज़ाज व मज़ाक़ जिसमें आख़िरत का ख़्याल दुनिया पर, सुन्नत का असर रस्म व रिवाज पर, रूहानियत का असर मादिदयत पर ग़ालिब है बाक़ी रहेगा और कभी इस उम्मत को दुनिया परस्ती, सरतापा मादिदयत, इनकारे आख़िरत और बिदआत व तहरीफ़ात का पूरे तौर पर शिकार नहीं होने देगा।" (हदीस का बुनियादी किरदारः 49)

हज़रत मौलाना (रह0) की ज़िन्दगी पर क़ल्बी व

अख़लाक़ी हैसियत से हदीस शरीफ़ के जिस हिस्से ने सबसे ज़्यादा असर डाला, उनमें ख़ासकर तिरमिज़ी की किताबुज्जुहद व रिक़ाक़ और अबूदाऊद की किताबुल अदइया और किताबुल ईमान और किताबुल इल्म है। जिनके मुताल्लिक़ खुद हज़रत मौलाना (रह0) के यह अल्फ़ाज़ हदीस से इश्तिग़ाल रखने वालों के लिए ग़ौर का मक़ाम रखते हैं। वह मुताला–ए–हदीस की सरगुज़िश्त में लिखते हैं:

"अफ़सोस है कि यह अबवाब हमारे मदारिस में बहुत रवादारी और सरसरी तौर पर पढ़ाए जाते हैं, हालांकि यही अबवाब सीरत की तामीर का सबसे बड़ा ज़रिया और तरबियत व इस्लाह का सबसे मुअस्सिर सामान है।"

(मेरी इल्मी व मुतालआती ज़िन्दगी: 16)

हज़रत मौलाना (रह0) की तहरीर व तक़रीर दोनों में उन अबवाब से ख़ास इश्तिग़ाल और उनकी छाप यकसां तौर पर नज़र आती है, एक जगह हज़रत मौलाना (रह0) ने हदीस: "तीन चीज़ें ऐसी हैं कि वह जिसके अन्दर होंगी तो उसने ईमान का ज़ाएक़ा चख लिया" के तहत बरजस्ता यह बात फ़रमाई:

"दिल के साथ दिमाग़ का मोमिन होना भी ज़रूरी है, तन्हा इस्लाम की मुहब्बत काफ़ी नहीं, इसके साथ ख़िलाफ़े इस्लाम फ़लसफ़ों और दावतों की नफ़रत भी लाज़िमी है। ईमान की तकमील उस वक़्त तक नहीं होती है और एक मुसलमान उस वक़्त तक हक़ीक़ी ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक उसको कुफ़्र और मज़ाहिरे कुफ़्र से वहशत व दहशत न पैदा हो।"

(लिसानी व तहज़ीबी जाहिलियत का अलमिया: 17)

हज़रत मौलाना (रह0) की मुतवाज़िन तर्ज़े फ़िक्र का ख़ास्सा था कि वह हदीस के ज़ख़ीरे से ऐसे नतीजे निकालते, जिनकी तरफ़ उमूमन कम ही लोगों की निगाह जाती है, हज़रत मौलाना की शहर आफ़ाक़ तस्नीफ़ "अरकान–ए–अरबा" में जगह–जगह हदीस से इस्तदलाल इस बात का बैन सुबूत है, ज़कात के बाब में हज़रत मौलाना (रह0) ने हदीस "ज़कात का पैसा उनके मालदारों से लिया जाता है और उनके ग़रीबों को वापस कर दिया जाता है" के तहत बड़ी दिलचस्प बात बयान की है:

"जो टैक्स मौजूदा हुकूमतों में लगाए जाते हैं, वह ज़कात की ऐन ज़िद हैं, यह टैक्स ज़्यादातर मुतवस्सित तबक़ा और ग़रीबों से वसूल किये जाते हैं और अमीरों की तरफ़ लौटा दिये जाते हैं, यह दौलत जो किसानों के गाढ़े पसीने की कमाई और मजदूरों, कारीगरों, ताजिरों पर लगाए हुए टैक्स से हासिल होती है, बड़ी सख़ावत बल्कि बेदर्दी व बेरहमी के साथ ख़र्च कर दी जाती है।" (पेज: 158)

हज़रत मौलाना (रह0) हदीसों में मज़कूर मसनून दुआओं को भी एक अलग ज़ाविये निगाह से देखते थे, उनका मानना था कि अदइया मासूरा मुस्तक़िल मोजज़ात और दलाएले नुबूव्वत हैं, जिनसे नुबूव्वत का नूर, पैग़म्बर का यक़ीन और अब्दे कामिल का नियाज़ है और मैं इन्सानी ज़रूरियात की जामेअ नुमाइन्दगी है, हज़रत मौलाना का मशहूर रिसाला "सीरते मुहम्मदी (स0अ0व0) दुआओं के आइने में" इस मौज़ूअ पर शाहकार है, इसी में वह एक जगह रक़म तराज़ हैं:

"हदीस व सीरत के दफ़्तर में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की जो दुआएं मनकूल हैं, उन पर नज़र डालिए, क्या कोई बड़े से बड़ा अदीब अपनी बेबसी व कमज़ोरी का नक़्शा खींचने के लिए, अपना फ़क्र व एहतियाज बयान करने के लिए और दरियाए रहमत को जोश में लाने के लिए उससे ज़्यादा मुअस्सिर, इससे ज़्यादा दिल आवेज़ और उससे ज़्यादा जामेअ अल्फ़ाज़ ला सकता है।" (पेज: 20)

हज़रत (रह0) की सनदे हदीस बराह रास्त हरमैन शरीफ़ैन के उल्मा तक पहुंचती है। आपको मौलाना हैदर हसन ख़ां टोंकी और मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह0) के वास्ते से यमनी व हिजाज़ी दोनों तरीक़े से इजाज़ते हदीस हासिल थी और उन दोनों बुज़ुर्गों को यमनी सिलसिले में मुहद्दिसे जलील शेख़ हुसैन बिन मोहसिन अंसारी (रह0) से इजाज़त थी और हिन्दुस्तानी सिलसिले में मुहद्दिसे अज़ीम मियां सैय्यद नज़ीर हुसैन देहलवी (रह0) से इजाज़त हासिल थी।

आख़िरी उम्र में हज़रत मौलाना (रह0) का हदीस से इश्तिग़ाल ग़ायत दर्जे बढ़ गया था। मक़बूलियत का यह आलम था कि दूर–दराज़ से लोग इजाज़ते हदीस के लिए हाज़िर होते थे। हिजाज़े मुक़द्दस के असफ़ार में भी वहां के बड़े–बड़े उलमा, हज़रत मौलाना (रह0) की इजाज़ते हदीस से मुशर्रफ़ होते थे, जिनमें मुहद्दिसे शाम अल्लामा अब्दुल फ़त्ताह अबूग़ुद्दा (रह0) और मुहद्दिसे हिन्द मौलाना यूनुस जौनपुरी (रह0) ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं। हज़रत मौलाना (रह0) का उम्र भर यह मामूल रहा है कि हदीस की कोई न कोई किताब उनके ज़ेरे मुताला रहती, वफ़ात से क़ब्ल यह मामूल बन गया था कि आप बुख़ारी के दो सफ़े रोज़ाना अपने किसी अज़ीज़ से ज़रूर सुनते थे।

रूस–यूक्रेन युद्ध : दृश्य–परिदृश्य

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

1917ई0 में कम्यूनिस्ट क्रान्ति (बालश्वेक) ने दुनिया का इतिहास बदल दिया था। इस क्रान्ति के गर्भ से 15 विभिन्न लोकतन्त्र पर आधारित सोशलिस्ट गणराज्य का उदय हुआ जिसमें लगभग 100 राज्यों के लोग शामिल थे जो ज़मीन के छटे हिस्से के मालिक थे। 1922ई0 में लेनिन के नेतृत्व में दूर–दराज़ के राज्यों को रूस में शामिल किया गया और सरकारी तौर पर यू.एस.एस.आर. (USSR) की स्थापना हुई।

सोवियत यूनियन की अर्थव्यवस्था कार्ल मार्क्स के आर्थिक नियमों पर आधारित थी। यह अर्थव्यवस्था पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर लागू की जाती थी, तथा राष्ट्र की अधिकतर आबादी को सख़्ती के साथ कृषि तथा औद्योगिक कार्यों में लगाया जाता।

बीसवीं सदी सोवियत यूनियन के उत्थान की सदी थी; इतिहास, अर्थव्यवस्था, शिल्पकारी तथा विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में उसी का सिक्का चलता था। अंतरिक्ष में पहला सेटेलाइट भी उसी ने भेजा तथा पहला मनुष्य भी। राजनीतिक मोर्चे में उसने हिटलर को परास्त किया। वियतनाम तथा क्यूबा की क्रान्ति में महत्वपूर्ण किरदार निभाया तथा एटमी शक्ति की दौड़ में भी आगे–आगे रहा।

सोवियत यूनियन को ताक़त तथा उसकी उन्नति को चैलेंज देने वाली दूसरी महान शक्ति सयुंक्त राष्ट्र अमेरिका (USA) की थी लेकिन संयोग की बात कि दूसरे विश्वयुद्ध में सोवियत यूनियन तथा अमेरिका का संयुक्त शत्रु जर्मनी था, इसलिए यह दोनों शक्तियां एक ही पक्ष में शामिल थीं, लेकिन जब अमेरिका ने सोवियत यूनियन की मर्ज़ी को शामिल करते हुए बग़ैर जापान पर एटमी हमले किये तो इस एकता में ज़बरदस्त दरार पड़ गयी, फिर यह दरार युद्धबंदी के बाद नवनिर्माण को लेकर और बढ़ती गयी जिसका आधार उनकी राजनीतिक व आर्थिक विचार थे।

विश्वयुद्ध में विजयी शक्तियों के मध्य जर्मनी के बंटवारे को लेकर भी ज़बरदस्त मतभेद प्रकट हुए तथा पश्चिमी दुनिया दो विभिन्न गिरोहों में बंट गयी, एक सोवियत यूनियन की अध्यक्षता वाला कम्यूनिस्ट तथा दूसरे पूंजीवादी जिस पर अमेरिका का वर्चस्व था।

साम्यवाद तथा पूंजीवाद के मतभेद के साथ ही दुनिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सोवियत यूनियन तथा अमेरिका सहित मित्र देशों में बंट गया। यह दोनों देश 1945ई0 से लेकर 1991ई0 तक निर्माण व उन्नति के विभिन्न क्षेत्रों में तथा असलहों की प्राप्ति में एक दूसरे के बड़े दुश्मन रहे। इस लम्बे अर्से में उनके मतभेद, विरोधाभास तथा लड़ाई को "शीत युद्ध" (Cold War) का नाम दिया जाता है।

कुछ दहाइयों में शीत युद्ध का दायरा यूरोप तथा दुनिया के हर क्षेत्र में फैल गया। अमेरिका ने सोवियत यूनियन की ताक़त को सीमित करने के लिए विशेषतयः पश्चिमी यूरोप, मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में कई देशों से गठबंधन स्थापित किया।

1949ई0 में अमेरिका ने सोवियत यूनियन के बढ़ते प्रभाव और यूरोप की ओर विस्तार के ख़तरे को ध्यान में रखते हुए एक आर्गानाइज़ेशन की बुनियाद रखी जिसमें अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा, फ्रांस, पुर्तगाल, इटली इत्यादि लगभग बारह देश शामिल हुए। इसके ज़रिये सदस्य देशों के संयुक्त रक्षा हेतु राजनीतिक व सैन्य गठबंधन स्थापित हुआ, इस आर्गानाइज़ेशन को नैटो (The North Atlantic Treaty Organisation) कहा जाता है जिसमें इस समय तीस सदस्य शामिल हैं।

नैटो की धारा 5 के अनुसार "सभी सदस्य इस बात पर सहमत हैं कि यूरोप या उत्तरी अमेरिका में से

किसी भी देश पर होने वाला हमला तमाम देशों पर हमला माना जाएगा तथा समस्त सदस्य इस बात पर भी सहमत हैं कि ऐसे किसी भी हमले की स्थिति में सभी सदस्य संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के आर्टिकल 51 के अनुसार अपने व्यक्तिगत तथा संयुक्त रक्षा अधिकारों का प्रयोग करते हुए उस देश की सहायता करेंगे जिस पर हमला हुआ होगा। लगभग पचास साल के शीत युद्ध के दौरान कई बार ऐसे विवाद भी पैदा हुए जो दुनिया को विश्वयुद्ध के दहाने पर ले आए जिनमें बर्लिन नाकाबन्दी (1948ई0–1949ई0) कोरिया का युद्ध (1950ई0–1953ई0) वियतनाम का युद्ध (1959ई0–1975ई0) क्यूबा मिसाइल संकट (1962ई0) तथा सोवियत–अफ़ग़ान युद्ध (1979ई0–1989ई0) चर्चा योग्य हैं।

सोवियत यूनियन के ख़िलाफ़ अमरीका के शीतयुद्ध, नैटो की घेराबंदी तथा आन्तरिक व बाह्य कारणों पर ध्यान दिये बग़ैर विभिन्न राष्ट्रों पर तानाशाही के साथ शासन करना तथा साम्यवाद की असंतुलित व्यवस्था में उनको ढालने का प्रयास करना शासन की चूलें हिला देने के बराबर था। अतः जल्द ही देश की राजनीतिक पकड़ ढीली हुई, अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई तथा 1980ई0 में अमेरिका को टक्कर देने वाले देश की जी.डी.पी. अमेरिका के आधी रह गयी।

25 दिसम्बर 1991ई0 को सोवियत यूनियन के प्रमुख मीख़ाइल गोरबाचोफ़ ने अपनी नाकामी को स्वीकार करते हुए अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया तथा अपने अधिकार रूसी फ़ेडरेशन के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति बोरिस येलसिन के हवाले कर दिये। उस रात हथौड़े और दंराती के चिन्ह के साथ सोवियत यूनियन का लाल झंडा क्रीमान से नीचे उतारा गया और उसकी जगह रूसी तिरंगा लहराने लगा। सोवियत यूनियन का ख़ात्मा दुनिया का सबसे बड़ा भौगोलिक बदलाव था।

सोवियत यूनियन के अचानक ख़ात्मे ने पूरी दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया। यह एक महान साम्राज्य था जिसने सत्तर सालों तक विभिन्न मित्र देशों को अपने नियन्त्रण में रखा था और अपना राजनीतिक वर्चस्व पूरी दुनिया में फैलाया था। यह बिखराव इतना बड़ा था कि पहले दिन से आज तक इसके झटके महसूस किये जाते रहे हैं।

सोवियत यूनियन के बिखरते ही 15 अलग–अलग राष्ट्र अस्तित्व में आए जिनमें केन्द्रीय राष्ट्र "रूस" (Russia) का था। इन स्वतन्त्र राष्ट्रों में यूक्रेन (Ukraine) को अपने इतिहास व भूगोल तथा राजनीतिक परिदृश्य के आधार पर सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

यूक्रेन 1920ई0 से लेकर 1991ई0 तक सोवियत यूनियन का हिस्सा था, नब्बे के दशक में जब सोवियत यूनियन का पतन होने लगा तो यूक्रेन ने 16 जुलाई 1990ई0 को सोवियत यूनियन से अलगाव की घोषणा कर दी और फिर लगभग एक साल बाद 24 अगस्त 1991ई0 को उसने अपनी स्वायत्ता व सोवियत यूनियन से सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी।

यूक्रेन लगभग पांच करोड़ की आबादी पर आधारित एक ईसाई देश है जिसमें लगभग 17 प्रतिशत के क़रीब आबादी रूसी नस्ल से है। रूस का हमेशा से दावा है कि यूक्रेन उसी का हिस्सा है। इसी आधार पर 1921ई0 में स्टालिन ने यहां इतिहास की बदतरीन क्रूरता की थी, जिसका उद्देश्य यूक्रेन से यूक्रेनियों का सफ़ाया था, लेकिन हज़ारों मौतों के बावजूद यूक्रेनियों का आज़ादी का जज़्बा ठंडा न पड़ सका।

यूक्रेन पूर्वी यूरोप में क्षेत्रीय रूप से रूस के बाद सबसे बड़ा देश है। इसकी सीमाओं में लेथूवानिया, पोलैण्ड तथा रोमानिया शामिल हैं; जहां अमरीका ने नैटो की सहायता से अपने सैन्य अड्डे बना रखे हैं। यूक्रेन की अधिकांश जनसंख्या पश्चिमी स्वभाव की समर्थनकर्ता है तथा ख़ुद यूक्रेन भी नैटो में सम्मिलित होना चाहता है, जिसमें अमेरिका की ज़ाति दिलचस्पी भी शामिल है ताकि रूस को पूर्ण रूप से नियन्त्रित करना आसान हो। इधर रूस का हमेशा से दावा है कि यूक्रेन उसी का हिस्सा है जिसे ताक़त के बल पर वह दोबारा हासिल कर सकता है। लेकिन नैटो में शामिल होने के बाद यूक्रेन जैसे कमज़ोर देश के सामने रूस

को घुटने टेकने पड़ सकते हैं, क्योंकि ऐसी स्थिति में अगर रूस यूक्रेन के ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही करता है तो यह कार्यवाही पूरे नैटो देशों के ख़िलाफ़ होगी और अकेला रूस नैटो की ताक़त का सामना नहीं कर सकता है, इसलिए वह हर सूरत में यूक्रेन को नैटो में शामिल होने से रोकना चाहता है।

2010ई0 में विक्टर येनूकोविच (Viktor Yanukovych) यूक्रेन का राष्ट्रपति बना। उसका झुकाव पश्चिमी यूरोप के बजाय रूस की ओर था। इसलिए यूरोपीय यूनियन से सम्बद्ध होने की संधि तोड़ दी, जिसके बाद पूरे यूरोप में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। इस विरोधी लहर के नतीजे में विक्टर यानूकोविच को सत्ता छोड़कर रूस में पनाह लेनी पड़ी। इसी दौरान यूक्रेन के पूर्वी इलाक़ों से रूस की सीमाओं पर तैनात सैनिकों पर हमले हुए, इसे ही मुद्दा बनाकर रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन के सबसे ज़्यादा रूसी इलाक़े के तौर पर जाने जाने वाले क्रीमिया पर क़ब्ज़े की कोशिश की, पहले रूसियों के अत्याचार का हवाला देकर वहां अपनी सेना उतारी, फिर देश के दूसरे हिस्सों से काट दिया, इसके बाद वहां की अधिकतर रूसी मूल की आबादी का रेफ़रेन्डम कराकर उसे रूस का हिस्सा बना लिया। क्रीमिया पर क़ब्ज़े के समय रूस ने मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए पश्चिमी यूक्रेन के दो राज्यों लूहांस्क (Luhansk) और डोनेस्क (Donetsk) पर भी क़ब्ज़ा कर लिया और बाद में उसे रूस समर्थित अलगाववादियों के हवाले कर दिया, जहां लगातार होने वाली झड़पों का सिलसिला शुरू हो गया, जिसने गृहयुद्ध का रूप धारण कर लिया। अलगाववादी रूस समर्थित हैं तथा यह दोनों राज्य यूक्रेन के सर्वाधिक उपजाऊ राज्य माने जाते हैं। 21 फ़रवरी 2022ई0 को रूस ने इन दोनों राज्यों को स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया तथा दोनों देश नोवेरूसिया (Noverussia) नामक ईसाई फ़ेडरेशन में शामिल हो गए फिर अमन बहाली के नाम से रूस ने नोवेरूसिया में अपनी फ़ौजें भी उतार दीं।

रक्षा शक्ति के मामले में यूक्रेन की रूस से कोई तुलना नहीं है। दुनिया भर में सैन्य शक्तियों तथा रक्षा के साज़ व सामान के आधार पर देशों का वर्गीकरण जारी करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्था "ग्लोबल फ़ायर पॉवर" (Global Firepower) के अनुसार रूस दुनिया की दूसरी बड़ी सैन्य शक्ति है जबकि यूक्रेन का नम्बर बाइसवां है।

रूस के पास बड़ी संख्या में एटमी हथियार भी मौजूद हैं। सोवियत यूनियन के समापन के बाद रूस को सोवियत एटमी हथियारों का बड़ा भण्डार विरासत में मिला था, यद्यपि रूस ने अपने एटमी हथियारों के भण्डार में बड़ी हद तक कमी भी कर दी थी, लेकिन उसके बावजूद वह अब भी दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी एटमी शक्ति है। 2018ई0 में जनता से अपने वार्षिक संबोधन में पुतिन ने बहुत गर्व के साथ रूस के नए तथा ताक़तवर हथियारों का वर्णन किया था।

यह बात दिलचस्पी से ख़ाली नहीं होगी कि सोवियत यूनियन से अलगाव के समय यूक्रेन के पास काफ़ी एटमी हथियार मौजूद थे जो संख्या के लिहाज़ से दुनिया भर में इस समय तीसरे नम्बर पर थे। यह हथियार सोवियत यूनियन की ओर से वहां छोड़े गए थे फिर भी आज़ादी के बाद यूक्रेन ने ख़ुद को एटमी हथियारों से पाक करने का निर्णय लिया, उसके इस क़दम के बदले में अमरीका, इंग्लैण्ड और रूस ने 1994ई0 में यूक्रेन की सुरक्षा को यक़ीनी बनाने का समझौता किया जिसे "बुडापेस्ट मेमोरेन्डम" (Budapest Memorandum) कहा जाता है। वर्तमान परिस्थिति में जब दोनों देशों के बीच जंग छिड़ चुकी है यह समझौता फिर बहस का केन्द्र है।

रूस–यूक्रेन युद्ध शुरू होने से पहले–पहले जब नैटो एकता तथा अमरीका की ओर से यूक्रेन की हर प्रकार की मदद की ख़बरें आ रही थीं तब अक्सर लोग यही समझते थे कि तीसरा विश्व युद्ध होने वाला है लेकिन जब रूस ने यूक्रेन पर हमला किया तथा नैटो, अमरीका, इंग्लैण्ड सबने केवल राजनीतिक बयानों तथा प्रतिबन्धों पर संतोष किया तो तीसरे विश्वयुद्ध के गुब्बारे से भी हवा निकल गयी। अब यह जंग ज़्यादा देर तक जारी नहीं रहेगी बल्कि बहुत जल्द रूस बहुत से महत्वपूर्ण स्थानों पर क़ब्ज़ा करके जंगबंदी की घोषणा कर देगा।

इस्लाही ख़ुतबात

शब–ए–बराअत की फ़ज़ीलत व अहमियत

मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब

"शब–ए–बराअत के बारे में यह कहना बिल्कुल ग़लत है कि इसकी कोई फ़ज़ीलत हदीस से साबित नहीं। हक़ीक़त यह है कि दस सहाबा किराम (रज़ि0) से हदीसें मरवी हैं, जिनमें रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने उस रात की फ़ज़ीलत बयान फ़रमायी। ख़ैरुल कुरून में भी इस रात की फ़ज़ीलत से फ़ायदा उठाने का एहतिमाम किया जाता रहा है। लोग इस रात के अन्दर इबादत का ख़ुसूसी एहतिमाम करते रहे हैं, लिहाज़ा इसको बिदअत कहना बेबुनियाद और बेअस्ल कहना ठीक नहीं। सही बात यही है कि यह फ़ज़ीलत वाली रात है। इस रात में जागना, इसमें इबादत करना बाइस–ए–अज्र व सवाब है और उसकी ख़ास अहमियत है। अलबत्ता यह बात दुरुस्त है कि इस रात में इबादत का कोई ख़ास तरीक़ा मुक़र्रर नहीं कि फ़लां तरीक़े से इबादत की जाए, बल्कि नफ़्ली इबादतें जिस क़द्र हो सके, वह इस रात में अंजाम दी जाए, नफ़्ली नमाज़ पढ़ें, कुरआन करीम की तिलावत करें, ज़िक्र करें, तस्बीह पढ़ें, दुआएं करें, यह सारी इबादतें इस रात में की जा सकती हैं, लेकिन कोई ख़ास तरीक़ा साबित नहीं।

यह फ़ज़ीलत वाली रातें शोर व गुल की नहीं हैं, मेले–ठेले की रातें नहीं हैं, यह इज्तिमाअ की रातें नहीं हैं, बल्कि यह रातें इसलिए हैं कि तन्हाई में किसी कोने में बैठकर तुम अल्लाह तआला के साथ ताल्लुक़ात ठीक कर लो और तुम्हारे और उसके दरम्यिान कोई हाएल न हो। लोग यह उज्र करते हैं कि अगर तन्हाई में इबादत करने बैठते हैं तो नींद आ जाती है, मस्जिद में शबीना और रोशनी होती है और एक भीड़ होती है, जिसकी वजह से नींद पर क़ाबू पाने में आसानी हो जाती है। इस बात पर यक़ीन करो कि अगर तुम्हें कुछ लम्हे तन्हाई में अल्लाह तआला से बातें करनें के मिल गए तो वह कुछ लम्हे उस सारी रात से बहुत बेहतर हैं जो तुमने मेले में गुज़ारी, इसलिए कि तन्हाई में जो वक़्त गुज़ारा वह सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारा और मेले में जो वक़्त गुज़ारा, वह रात इतनी क़ीमती नहीं, जितने वह चन्द लम्हात क़ीमती हैं, जो आपने इख़्लास के साथ रिया के बग़ैर तन्हाई में गुज़ार लिए।

मैं हमेशा कहता रहा हूं कि अपनी अक़्ल के मुताबिक़ काम करने का नाम दीन नहीं, अपना शौक़ पूरा करने का नाम दीन नहीं, बल्कि उनके कहने पर अमल करने का नाम दीन है। उनकी पैरवी और इत्तिबाअ का नाम दीन है। यह बताओ कि अल्लाह तआला तुम्हारे घंटे शुमार करते हैं कि तुमने मस्जिद में कितने घंटे गुज़ारे? वहां घंटे नहीं गिने जाते, वहां तो इख़्लास देखा जाता है। अगर कुछ लम्हे भी इख़्लास के साथ अल्लाह तआला के साथ राब्ते में रह गए, तो वह कुछ लम्हे ही इंशाअल्लाह बेड़ा पार करवा देंगे, लेकिन अगर आपने इबादत में कई घंटे गुज़ार दिये, मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ गुज़ारे तो उसका कुछ भी हासिल नहीं। मुझे तो ऐसा लगता है कि शब–ए–बराअत रमज़ानुल मुबारक का इस्तिक़बाल है, जिसमें रमज़ान की तैयारी हो रही है और अब वह मुक़द्दस महीना आने वाला है।"

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 03 | March 2022 | Volume: 14

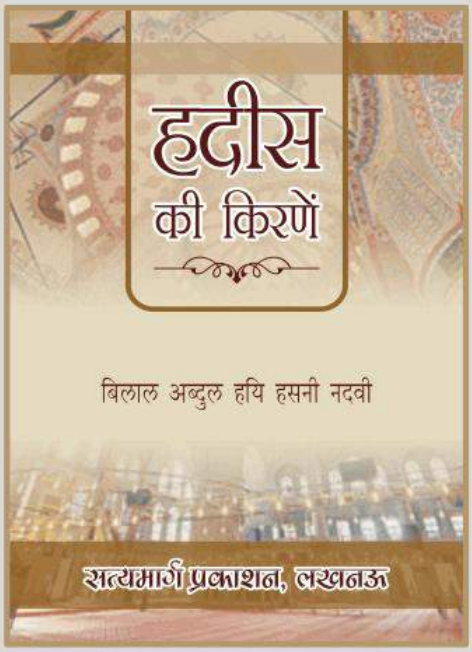

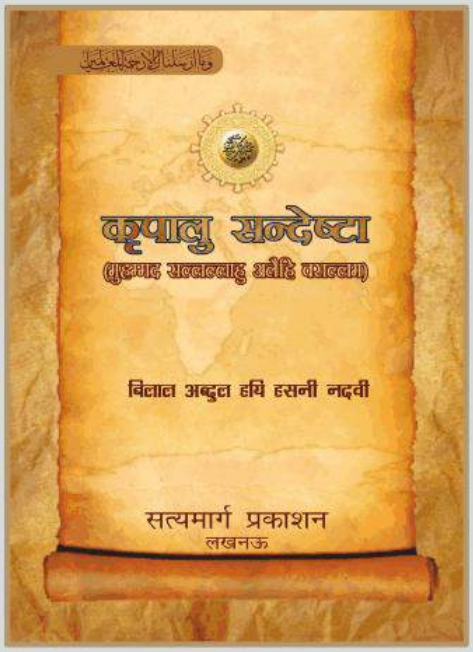

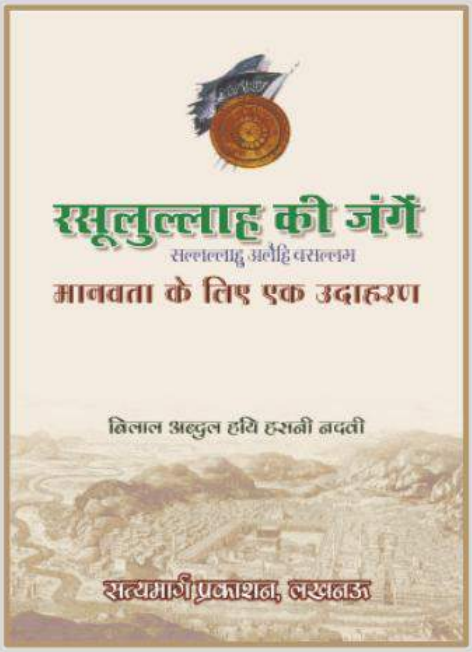

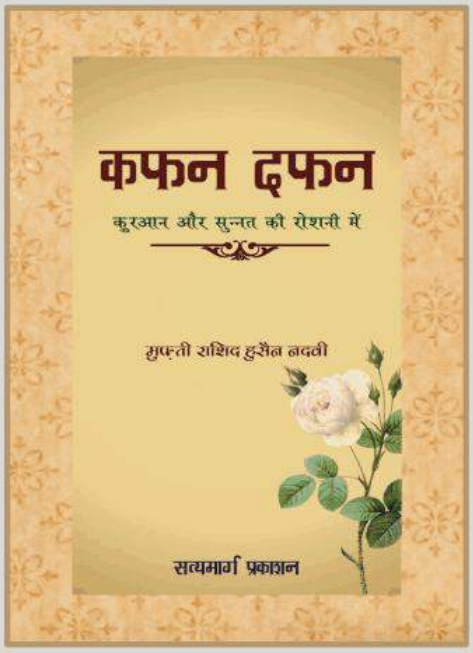

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.

Rs.15/-